04 - तुम झूठ तो नहीं बोल रहे

05 - 'ऋतस्य': मूर्त, अमूर्त, प्राचीन, नवीन जैसे तथ्यों की प्रदर्शनी

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 25 मई, 2025

06 -जिला अस्पताल में वार्ड बॉय की कमी, परिजन धकेल रहे स्ट्रेचर

07 - 'ओटीटी' अब अपराध कथाओं से मुक्त होने लगा

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 255, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

सूखे सरोवर
ताल-तलैया रे,
सागर-तीरे
प्यासी नैया रे।
?
आसमां से
अंगारे बरसे,
स्वाति बूँद
चातक तरसे,
जीवन करे
ता-ता थैया रे।
?
टपक रही हैं
स्वेद की बूँदें,
कपि-सा मन
उछले-कूदे,
शूलों बिछी
लगे शैय्या रे।
?
सर्दी के दिन
याद हो आए,
भीतर-भीतर
विरह जलाए,
दुर्लभ हुई है
अब तो छैंया रे।

– रामेश्वरम तिवारी

बुलंदी

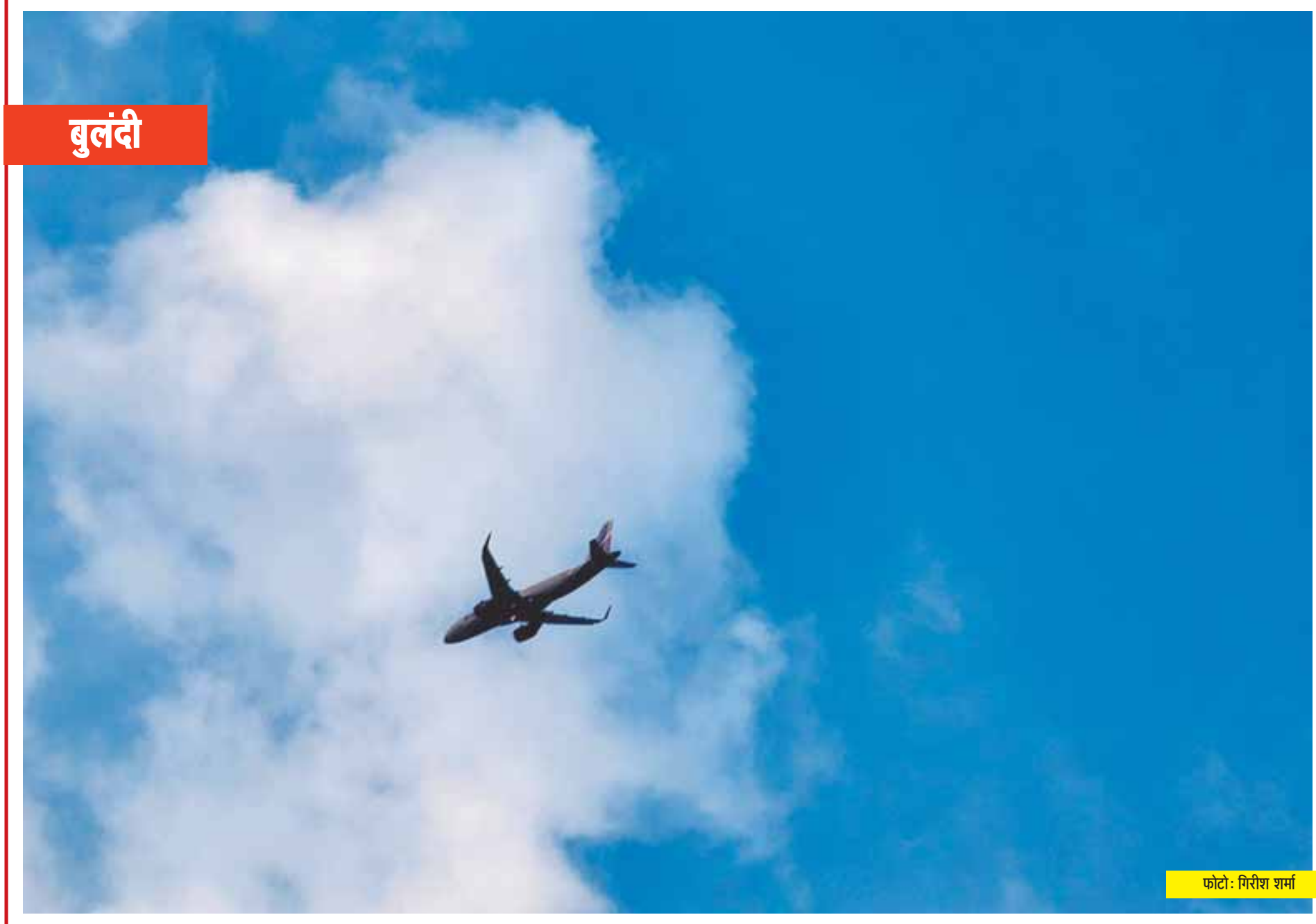

फोटो : गिरीश शर्मा

पीएम बोले-हमें टीम इंडिया की तरह काम करना होगा

- मोदी ने कहा-राज्य विकसित, तभी भारत विकसित होगा
- नीति आयोग की बैठक में तीन राज्यों के सीएम नहीं आए

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को नई दिल्ली के भारत मंडपम में नीति आयोग की 10वीं गवर्निंग काउंसिल की बैठक की अध्यक्षता कर रहे हैं। पीएम ने कहा- हमें टीम इंडिया की तरह काम करना होगा। विकसित भारत हर भारतीय का लक्ष्य है। जब हर राज्य विकसित होगा, तो भारत विकसित होगा। इस बैठक में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल, केंद्रीय मंत्री और नीति आयोग के उपाध्यक्ष, सदस्य और सीईओ शामिल हुए। नीति आयोग के स्टेटमेंट के मुताबिक, इस साल बैठक की थीम विकसित भारत के लिए विकसित राज्य है। बैठक में भारत को 2047 तक विकसित बनाने के लिए राज्यों की भूमिका पर जोर दिया जाएगा। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय को लेकर भी चर्चा होगी। केंद्र सरकार ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को देश के सामने मौजूद विकास से जुड़ी चुनौतियों के बारे में बताया। इसके अलावा भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए राज्य किस तरह आधारशिला बन सकते हैं, यह भी बताया गया। बैठक में उद्यमिता, कौशल और देश भर में स्थायी रोजगार के अवसर बढ़ाने के उपायों पर भी चर्चा की गई। ग्लोबल स्टैंडर्ड के अनुसार हर मुख्यमंत्री को अपने राज्य में कम से कम एक टूरिस्ट प्लेस विकसित करना चाहिए। भारत में तेजी से शहरीकरण हो रहा है। हमें भविष्य के लिए तैयार शहरों की दिशा में काम करना चाहिए। डेवलेपमेंट, मॉर्डनाइजेशन और स्थिरता हमारे शहरों के विकास का इंजन होना चाहिए। एक साथ मिलकर टीम इंडिया की तरह काम करें तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं।

मध्यप्रदेश को अग्रणी राज्य बनाने के लिए सरकार संकल्पित: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नीति आयोग की विकसित राज्य फॉर विकसित भारत @2047 बैठक में की सहभागिता

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता मे नीति आयोग की शासी परिषद (गवर्निंग काउंसिल) की 10वीं बैठक में भाग लिया। यह बैठक 'विकसित राज्य फॉर विकसित भारत ञ्च2047' थीम पर केंद्रित रही।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत-आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण के विजन से प्रेरित होकर मध्यप्रदेश को देश के अग्रणी राज्यों की प्रथम पंक्ति में स्थापित करने के लिए राज्य सरकार संकल्पित है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैठक में शामिल होकर प्रधानमंत्री श्री मोदी का मार्गदर्शन प्राप्त किया और इसे भारत के भविष्य निर्माण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल बताया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर कहा कि प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व में सभी राज्य 'टीम इंडिया' की भावना के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज मध्यप्रदेश विकास और लोक कल्याण के संकल्प पथ पर अग्रसर है और निरंतर नए प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

तय समय से पहले मारी एंट्री

केरल पहुंचा मानसून

- 8 दिन पहले झमाझम शुरुआत, यह 16 साल में सबसे जल्दी
- 4 जून तक एमपी-यूपी पहुंचने की जताई जा रही है संभावना

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून शनिवार को केरल पहुंच गया। यह अपने तय समय 8 दिन पहले पहुंचा है। मौसम विभाग के मुताबिक, 16 साल में ऐसा पहली बार हुआ जब मानसून इतनी जल्दी आया है। 2009 में मानसून 9 दिन पहले केरल पहुंचा था। वहीं, पिछले साल यह 30 मई को केरल पहुंचा था। मानसून चार दिन से देश से करीब 40-50 किलोमीटर दूर अटका था और शुक्रवार शाम आगे बढ़ा। इसके आज ही तमिलनाडु और कर्नाटक के कई इलाकों में भी पहुंचने की संभावना है।

एक हफ्ते में देश के दक्षिणी और पूर्वोत्तर राज्यों जबकि 4 जून तक मध्य और पूर्वी भारत को कवर कर सकता है। आम तौर पर मानसून 1 जून को केरल पहुंचता है और 8 जुलाई तक पूरे देश को कवर कर लेता है। यह 17 सितंबर के आसपास वापस लौटना शुरू करता है और 15 अक्टूबर तक पूरी तरह से वापस चला जाता है। मौसम विज्ञानियों के अनुसार, मानसून की शुरुआत की तारीख और सीजन के दौरान कुल बारिश के बीच कोई संबंध नहीं है। इसके जल्दी या देर से पहुंचने का मतलब यह नहीं है कि यह देश के अन्य हिस्सों को भी उसी तरह कवर करेगा। आईएमडी के आंकड़ों के मुताबिक, बीते 150 साल में मानसून के केरल पहुंचने की तारीखें काफी अलग रही हैं। 1918 में मानसून सबसे पहले 11 मई को केरल पहुंच गया था, जबकि 1972 में सबसे देरी से 18 जून को केरल पहुंचा था। इस साल मानसून में अल नीनो की संभावना नहीं मौसम विभाग ने अप्रैल में कहा था कि 2025 के मानसून सीजन के दौरान अल नीनो की संभावना नहीं है। यानी इस साल सामान्य से ज्यादा बारिश होगी।

कम बारिश की आशंका न के बराबर है। 2023 में अल नीनो सक्रिय था, जिसके कारण मानसून सीजन में सामान्य से 6 फीसदी कम बारिश हुई थी। समुद्र में जाने पर 27 मई तक रोक मौसम विभाग ने केरल के तटीय और आंतरिक क्षेत्रों में आंधी की चेतावनी दी है।

'दीदी' के लिए मुसीबत बन जाएगी मुर्शिदाबाद हिंसा!

- बीजेपी इसे बनाएगी बड़ा मुद्दा, बंगाल में होगा 'खेला'

कोलकाता (एजेंसी)। साल 2011 से लगातार पश्चिम बंगाल की सत्ता में बैठी तृणमूल कांग्रेस के लिए अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले हालात मुश्किल होते दिख रहे हैं क्योंकि मुर्शिदाबाद में हुई सांप्रदायिक हिंसा को लेकर बीजेपी ममता बनर्जी सरकार पर हमलावर है। कोलकाता हाई कोर्ट के द्वारा बनाई गई एक समिति की हाल ही में आई रिपोर्ट के बाद ममता बनर्जी और टीएमसी की मुश्किलों में निश्चित रूप से बढ़ोतरी ही हुई है। इस समिति ने मुर्शिदाबाद की हिंसा के लिए टीएमसी के स्थानीय नेतृत्व को दोषी ठहराया है। समिति ने टीएमसी के एक विधायक और पार्षद का नाम लिया है। समिति ने यह भी आरोप लगाया है कि हिंसा के मामले में पुलिस पूरी तरह निष्क्रिय थी। समिति की रिपोर्ट आने के बाद ही बीजेपी ने ममता बनर्जी सरकार पर अपने हमलों को धार दी है और टीएमसी को अल्पसंख्यकों का तुष्टिकरण करने वाली पार्टी बताया है। समिति की रिपोर्ट कहती है कि इन हमलों में स्थानीय पार्षद महबूब आलम का हाथ था। समिति की रिपोर्ट में समसेरगंज के विधायक अमीरुल इस्लाम का भी नाम है। रिपोर्ट कहती है कि बेतबोना के ग्रामीणों ने पुलिस को फोन किया लेकिन पुलिस ने कोई जवाब नहीं दिया। टीएमसी के एक स्थानीय नेता ने बताया कि अमीरुल और महबूब आलम दोनों ही टीएमसी की सरकारों में संपन्न हुए हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 25 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

10 लाख का ईनामी जेजेएमपी सुप्रीमो पुलिस मुठभेड़ में ढेर

● लातेहार के ईचाबार जंगल में एनकाउंटर

लातेहार (एजेंसी)। लातेहार जिले के लिए आतंक का पर्याय बने जेजेएमपी के सुप्रीमो पप्पू लोहरा समेत दो नक्सलियों को पुलिस मुठभेड़ में मार गिराया है। बताया जाता है कि लातेहार थाना क्षेत्र के ईचाबार जंगल में शनिवार सुबह पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में झारखंड जनसंघर्ष मुक्ति मोर्चा का सुप्रीमो पप्पू लोहरा और पांच लाख

का इनामी नक्सली सबजोनल कमांडर प्रभात गंझू मारा गया है जबकि एक नक्सली घायल है। जिसे सदर अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया गया है। वहीं सेट वन का जवान घायल हुआ है। उसका नाम अवध सिंह है। घायल जवान को एयर लिफ्ट कर रांची के राज अस्पताल में इलाज के लिए लाया गया है। जानकारी के मुताबिक लातेहार एसपी कुमार गौरव के नेतृत्व में यह अभियान चलाया गया। इस अभियान में सीआरपीएफ और झारखंड पुलिस की टीम शामिल थी। पुलिस को सूचना मिली थी कि पप्पू लोहरा अपने साथियों के साथ बड़ी वारदात करने की योजना बना रहा है।

समंदर में 'तमाल' करेगा कमाल! सभी टेस्ट में हुआ पास

● नेवी में अगले महीने होगा कमीशन, और बढ़ जाएगी ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन नेवी के लिए रूस में बना वॉरशिप 'तमाल' सभी टेस्ट में पास हो गया है। सूत्रों के मुताबिक उसका सी-ट्रायल पूरा हो गया है जिसमें समंदर में सभी टेस्ट किए जाते हैं। अब इस हफ्ते वह डॉकयार्ड में आ जाएगा। इसके बाद अगले महीने के आखिरी हफ्ते तक तमाल इंडियन नेवी का हिस्सा बन जाएगा। रूस में ही इसकी कमिशनिंग होगी, जिसके बाद इसे भारत लाया जाएगा। तमाल स्टेल्थ गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट है। नेवी में कमिशन होने के बाद यह हो जाएगा आईएनएस (इंडियन नेवल शिप) तमाल। इंडियन नेवी की करीब 200 लोगों की टीम भी रूस में है जो इस वॉरशिप के ट्रायल में शामिल है। तमाल की स्पीड 30 नॉटिकल मील है। इससे एंटी शिप ब्रह्मोस मिसाइल फायर की जा सकती है। एंटी सबमरीन वॉरफेयर के लिए भी इसे खास तौर पर डिजाइन किया गया है। दुश्मन की सबमरीन के हमलों से निपटने के लिए एंटी सबमरीन रॉकेट्स और टॉरपीडो भी इस वॉरशिप में मौजूद हैं। इस वॉरशिप पर एक हेलीकॉप्टर को भी तैनात किया जा सकता है। इसका वजन करीब 3900 टन है। तमाल के शामिल होने के बाद इंडियन नेवी के पास 14 फ्रिगेट हो जाएंगे। अभी इंडियन नेवी के पास 13 फ्रिगेट हैं। साथ ही 10 डिस्ट्रॉयर हैं और 10 कोरवेट हैं। फ्रिगेट साइज में कुछ छोटा होता है और फ्रिगेट के मुकाबले डिस्ट्रॉयर करीब डेढ़ गुना बड़ा होता है। फ्रिगेट किसी एक तरह के रोल के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है और बाकी रोल में इसका इस्तेमाल रक्षात्मक भूमिका में करते हैं। जबकि डिस्ट्रॉयर में एक साथ कई रोल निभाने की क्षमता है। कोरवेट साइज में फ्रिगेट से भी छोटा होता है। साल 2016 में भारत और रूस के बीच 4 तलवार क्लास स्टेल्थ फ्रिगेट बनाने के लिए समझौता हुआ था। जिनमें से दो रूस में और दो भारत में बनने थे। रूस में बने 'तुशील' को पिछले साल ही नेवी में शामिल किया गया है और अब तमाल भी नेवी को मिलने वाला है। नेवी पहले ही यह साफ कर चुकी है कि अब भविष्य में कोई और वॉरशिप बाहर से नहीं खरीदा जाएगा। इसलिए 'तमाल' नेवी का आखिरी इंपोर्टेड वॉरशिप होगा।

शुभमन गिल भारतीय टेस्ट टीम के नए कप्तान

संभालेंगे रोहित शर्मा की विरासत, पंत उप-कप्तान

इंग्लैंड दौरे के लिए 18 सदस्यीय टीम का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। बल्लेबाज शुभमन गिल भारतीय टेस्ट टीम के नए कप्तान बनाए गए हैं। ऋषभ पंत उप-कप्तान चुने गए हैं। बीसीसीआई ने शनिवार को मुंबई में हुई मीटिंग में इसका ऐलान किया। साथ ही इंग्लैंड दौरे के लिए 18 सदस्यीय टीम की घोषणा भी हुई। 20 जून से शुरू हो रहे

इंग्लैंड दौरे में भारत को 5 टेस्ट खेलने हैं। विराट कोहली और रोहित शर्मा के रिटायरमेंट के बाद टीम में साई सुदर्शन और करुण नायर को जगह मिली है। वहीं शार्दुल ठाकुर की टीम में वापसी हुई है। 25 साल और 258 दिन की उम्र में गिल टेस्ट में भारत की कप्तानी करने वाले पांचवें सबसे युवा क्रिकेटर बन गए हैं। उनसे पहले मंसूर अली खान पटौदी (21 साल, 77 दिन), सचिन तेंदुलकर (23 साल, 169 दिन), कपिल देव (24 साल, 48 दिन) और रवि शास्त्री (25 साल, 229 दिन) हैं। 33 साल के करुण नायर 8 साल बाद टेस्ट मैच खेलेंगे।

उन्होंने 2017 में आखिरी टेस्ट खेला था। डोमेस्टिक क्रिकेट में बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत नायर ने टीम में जगह बनाई है। उन्होंने पिछले सीजन 9 रणजी ट्रॉफी मैच में 4 शतक के साथ 863 रन बनाए थे। इसके अलावा विजय हजारे ट्रॉफी की 8 पारियों में 5 शतक के साथ 779 रन बनाए थे। उनकी शानदार बल्लेबाजी की बदौलत विदर्भ की टीम ने पिछले सीजन रणजी खिताब जीता और विजय हजारे ट्रॉफी की फाइनलिस्ट रही। करुण को पहले ही इंडिया ए टीम में शामिल किया जा चुका है, जो कुछ दिनों में इंग्लैंड के लिए रवाना होगी।

सुप्रीम कोर्ट सीजेआई केंद्रित अदालत, अब छवि बदलनी होगी

● विदाई भाषण में जस्टिस अभय एस. ओका ने दिया बड़ा संदेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस अभय एस ओका शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट से रिटायर हो गए। अपने विदाई भाषण के दौरान जस्टिस ओका ने शीर्ष कोर्ट को प्रधान न्यायाधीश केंद्रित अदालत बताया और इसकी संरचना में देश के विभिन्न क्षेत्रों से 34 न्यायाधीशों के आने के मद्देनजर इसमें बदलाव की वकालत की। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में, जस्टिस ओका ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट ने लोअर और जिला अदालतों की उपेक्षा की है, जो न्यायपालिका की रीढ़ हैं। लोअर कोर्ट में बहुत अधिक मामले लंबित हैं और कुछ मामले तो 30 साल से लंबित हैं। जस्टिस ओका ने

अपनी विदाई के लिए आयोजित कार्यक्रम में कहा कि हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट की तुलना में अधिक लोकतांत्रिक तरीके से काम करते हैं, क्योंकि वहां पांच जजों की एक प्रशासनिक समिति होती है। प्रशासनिक समिति की ओर से प्रमुख फैसले लिए जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में मैंने पाया है कि शीर्ष अदालत प्रधान न्यायाधीश केंद्रित न्यायालय है और मुझे लगता है कि हमें इसमें बदलाव करने की जरूरत है।

जस्टिस ओका ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट 34 जजों की अदालत है। वे देश के विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं। इसलिए प्रधान न्यायाधीश केंद्रित अदालत की छवि को बदलने की जरूरत है। इससे पहले दिन में, जस्टिस ओका ने कहा कि उच्चतम न्यायालय एक ऐसी अदालत है, जो संवैधानिक स्वतंत्रता को कायम रख सकती है और यही संविधान निर्माताओं का सपना था। वकीलों, बार नेताओं, सीजेआई गवई की सराहना पर ओका ने कहा कि मुझे स्वीकार करना होगा कि मैं निःशब्द हूं।

सीजेआई प्रोटोकॉल उल्लंघन केस में कार्रवाई की याचिका खारिज

● चीफ जस्टिस गवई ने कहा-यह सस्ती पब्लिसिटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को एक वकील की जनहित याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें महाराष्ट्र के सीनियर अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की गई थी। याचिकाकर्ता का आरोप था कि इन अधिकारियों ने चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई के पहले मुंबई दौरे के दौरान प्रोटोकॉल का उल्लंघन किया। मुख्य न्यायाधीश गवई और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने इस याचिका को

पब्लिसिटी इंटरेस्ट लिटिगेशन बताया और 7 साल के अनुभव वाले याचिकाकर्ता वकील शैलेंद्र मणि त्रिपाठी पर 7,000 का जुर्माना लगाया, जो उन्हें लीगल सर्विसेज अथॉरिटी में जमा करना होगा। सुनवाई के दौरान सीजेआई ने कहा, ये बहुत छोटा मामला है, इसे इतना बड़ा नहीं बनाया जाना चाहिए। कोर्ट पहले ही प्रेस रिलीज के जरिए यह साफ कर चुका है कि इस मुद्दे को यहीं खत्म कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने याचिकाकर्ता से कहा, आप बस अखबार में अपना नाम छपवाना चाहते हैं। अगर आपने पद की गरिमा के बारे में सोचा होता, तो आपको पता होता कि मैंने इस मामले को यहीं समाप्त करने की अपील की थी। यह याचिका जुर्माने के साथ खारिज की जाएगी। पीठ ने कहा कि सीजेआई पहले ही सार्वजनिक रूप से इस मामले पर अपनी बात रख चुके हैं और यह कोई गंभीर मुद्दा नहीं था।

खंडवा में गोली मारकर फल कारोबारी की हत्या

पत्नी-बच्चों के साथ सो रहा था; वारदात से पहले हमलावर ने पड़ोस के मकानों की कुंडी लगाई

खंडवा (नप्र)। खंडवा के बोरगांव बुजुर्ग गांव में शनिवार तड़के करीब 4 बजे अज्ञात हमलावर ने गोली मारकर फल व्यापारी की हत्या कर दी। घटना के समय व्यापारी में अपनी पत्नी और बेटे के साथ सो रहा था। बताया जा रहा है कि हमलावर ने घर में घुसकर गोली मारी है। परिजन को पटाखे फूटने जैसी आवाज आई तो वह नींद से जागे। देखा तो अमीन के कान और सिर के पास से खून बह रहा था। परिवार वाले जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी लगते ही पुलिस मौके पर पहुंची। टीआई दिलीप देवड़ा ने बताया गोली के खोखे के साथ पुलिस को मर्डर से जुड़े क्लू मिले हैं, लेकिन पिस्टल नहीं मिली। इसी आधार पर इन्वेस्टिगेशन चल रही है। गोली किसने और क्यों चलाई, इसको लेकर जांच की जा रही है। मामला प्रेम प्रसंग से जुड़ा भी बताया जा रहा है। हालांकि न तो परिवार ने पुष्टि की है और न ही पुलिस कुछ कह रही है।

मृतक अमीन खान (35) पिता खलील के चार बच्चे हैं। अमीन बोरगांव के बाजार में फल का ठेला लगाकर व्यापार करता था। पत्नी से उसका तलाक हो गया था। कुछ महीने पहले ही वापस आकर अमीन के साथ रहने लगी थी।घटना की जानकारी लगते ही पुलिस मौके पर पहुंची।

हमलावर ने पड़ोसियों के घर की कुंडी लगाई- पुलिस के मुताबिक

हत्यारे ने वारदात को अंजाम देने से पहले आसपास के मकानों में बाहर से कुंडिया लगा दी थी, ताकि गोली चलने के बाद उसकी आवाज सुनाई देने पर कोई अपने घर से बाहर ना निकल सके।

पटाखे जैसी आवाज सुनाई देने पर लोगों की नींद खुली। बाहर आने के लिए दरवाजा खोलने की कोशिश की लेकिन सिटकनी बाहर से लगी थी। किसी राहगीर ने उनके दरवाजे खोले। बाहर आने पर पता चला कि अमीन की गोली मारकर हत्या हो चुकी है।

पत्नी ने तलाक लेकर दूसरा निकाह किया, फिर लौटी- परिजन के मुताबिक अमीन का निकाह गांव की ही शहनाज से हुआ था। दोनों के चार बच्चे हैं। दो बेटे और दो बेटियां। पति-पत्नी के बीच साल भर पहले अनबन चल थी। इसी के चलते अमीन ने शहनाज से तलाक ले लिया था। इस बात को करीब आठ महीने हो चुके हैं। इस दौरान शहनाज ने महाराष्ट्र के जलगांव क्षेत्र के चोपड़ा निवासी सैयद अख्तर अली से निकाह कर लिया।

अख्तर के साथ शहनाज का रिश्ता करीब तीन-चार महीने तक चला। इसके बाद शहनाज को बच्चों की याद आने लगी। उसने कोर्ट के जरिए अख्तर से तलाक ले लिया फिर वापस अमीन के पास आ गई। अमीन के घर आई शहनाज को दो महीने ही हुए थे।

पुलिस को पत्नी पर शक, थाने में पूछताछ की जा रही- पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार राय ने फोरेंसिक और डॉग स्क्वॉड के साथ घटनास्थल का जायजा लिया है। मौके पर हत्या से जुड़े सबूत मिले हैं। खास बात यह है कि हत्यारा मृतक के घर में घुसा तो घर का दरवाजा पूरी तरह सुरक्षित था। दरवाजे को न तोड़ा गया, न ही उससे कोई छेड़छाड़ की गई। ऐसे में पुलिस को आशंका है कि दरवाजा भीतर से ही किसी ने हमलावर के लिए खोला है। प्रेम-प्रसंग के एंगल पर पत्नी पर शक गहरा गया है। पुलिस ने अमीन की पत्नी को पंधाना थाने बुलाया है, जहां उससे पूछताछ चल रही है।

बस ड्राइवर को आई नींद की झपकी

रेलिंग तोड़ 50 फीट गहरी खाई में गिरी, 15 यात्री घायल

भिंड (नप्र)। दिल्ली से अटेर जा रही यात्री बस के चालक को चंबल पुल पार करते ही नींद की झपकी आ गई। हाइवे की रेलिंग तोड़ते हुए बस 50 फीट गहरी खाई में जाकर पलट गई। ग्रामीणों ने तुरंत थाने में सूचना दी और रस्सी लेकर घटना स्थल पर आए।

ग्रामीण खाई में नीचे उतरे और घायलों को रस्सी के सहारे ऊपर पहुंचा। 11 घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। जबकि चार यात्रियों की गंभीर हालत देखते हुए एंबुलेंस से ग्वालियर भेजा गया है। घटना शनिवार सुबह साढ़े छह बजे फूफ थाना अंतर्गत बरही गांव के पास की है।

दिल्ली से अटेर जा रही थी बस- जानकारी के अनुसार बस शुक्रवार रात करीब नौ बजे दिल्ली के मंगलपुरी से सवारी लेकर अटेर के लिए चली। शनिवार सुबह भिंड-इटावा हाइवे स्थित चंबल पुल को पार करते ही मोड़ पर अचानक चालक को नींद की झपकी आ गई।

ज्योति के बांग्लादेश टूर की जांच में जुटीं केंद्रीय एजेंसियां

हिसार (एजेंसी)। केंद्रीय जांच एजेंसियों ने पाकिस्तान के लिए जासूसी के आरोप में पकड़ी गई हरियाणा की यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा के बांग्लादेश टूर की जांच शुरू कर दी है। जांच एजेंसियों के

सूत्रों के मुताबिक ज्योति पाकिस्तानी दूतावास के अधिकारी दानिश के कहने पर ही बांग्लादेश गई थी। इस दौरान वह दानिश के संपर्क में भी रही। खास बात यह है कि ज्योति ने जिस ढाका यूनिवर्सिटी के आसपास के वीडियो बनाए, उसी के छात्रों ने यहां की शेख हसीना का तख्तापलट किया था। केंद्रीय जांच एजेंसियां ज्योति से पता लगा रही हैं कि बांग्लादेश के तख्तापलट में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई की क्या भूमिका थी। क्या इसके बारे में ज्योति को कुछ पता है या दानिश ने उसे कोई ऐसी बात बताई थी। ज्योति फिलहाल 4 दिन के रिमांड पर हिसार पुलिस की कस्टडी में है।

पहली बार एनडीए से सत्रह महिला कैडेट पासआउट होंगी

● कहा-हमें जूनियर्स के लिए हाई-स्टैंडर्ड्स बनाने होंगे

पुणे (एजेंसी)। नेशनल डिफेंस एकेडमी (एनडीए) में महिला कैडेट्स का पहला बैच पासआउट होने वाला है। 30 मई को 148वें कोर्स की पासिंग आउट परेड होगी। इतिहास में यह पहली बार होगा जब 17 महिला कैडेट्स 300 से ज्यादा पुरुषों के साथ एनडीए से ग्रेजुएट होंगी। ये भारतीय सेना,

नेवी और एयर फोर्स जॉइन करेंगी। 2021 में सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को एनडीए परीक्षा देने की अनुमति देने का आदेश दिया था। इसके बाद यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन (यूपीएससी) ने महिलाओं को आवेदन करने की अनुमति दी। 2022 में पहली बार 17 महिला कैडेट्स का बैच एनडीए में शामिल हुआ था। इनमें से कुछ महिला कैडेट्स ने शुक्रवार को एनडीए में अपने तीन साल के सफर के बारे में अनुभव साझा किए।

आतंक के खिलाफ लड़ाई में भारत को मिल गया है जर्मनी का साथ

● विदेश मंत्री जयशंकर के सामने किया बड़ा ऐलान, पाक को लगेगी मिर्ची

बर्लिन (एजेंसी)। जर्मनी ने पहलगाम आतंकी हमले की निंदा करते हुए भारत के आतंकवाद के खिलाफ आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन किया है। जर्मनी के विदेश और वित्त मंत्री जोहान वेडफुल ने एस जयशंकर से मुलाकात के दौरान पहलगाम हमले की कड़ी निंदा की है। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर इस समय जर्मनी की यात्रा पर हैं। जर्मनी ने भारत और पाकिस्तान के बीच का मुद्दा दोनों देशों को आपस में ही सुलझाना चाहिए। यह भारत के तीसरे पक्ष की मध्यस्थता के खिलाफ रुख के साथ मेल खाता है। एस जयशंकर ने ट्वीट करते हुए लिखा, बर्लिन में जर्मनी के विदेश मंत्री जोहान वेडफुल के साथ आज बैठक हुई।

भारत के आतंकवाद के खिलाफ आत्मरक्षा के अधिकार को जर्मनी के समझने की सराहना करता हूं। मेरी और जोहान की रणनीतिक साझेदारी को मजबूत, गहरा और करीब बनाने पर चर्चा हुई। हमने आगे की संभावनाओं और क्षमता वाले क्षेत्रों की पहचान की है। जर्मनी के वित्त मंत्री जोहान वेडफुल ने एस जयशंकर के साथ संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि वह पहलगाम आतंकी हमले की जानकारी के लिए लगातार अपने फ्रांसीसी समकक्ष के संपर्क में थे। इस दौरान जयशंकर ने कहा कि भारत आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस रखता है। भारत परमाणु ब्लैकमेल के आगे नहीं झुकेगा।

सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड के जांच अधिकारी की मौत

जालंधर (एजेंसी)। मशहूर पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला के हत्या की जांच करने वाले जांच अधिकारी रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर की मौत हो गई है। शुक्रवार को उनकी मानसा कोर्ट में पेशी थी लेकिन इसी दिन बीमारी से उनके निधन की खबर आई। उन्हें लुधियाना के प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जिसके बाद कोर्ट ने सुनवाई की तारीख जुलाई महीने में तय कर दी। बता दें कि 29 मई 2022 को मानसा के जवाहरके में सिद्धू मूसेवाला की गोलियां मारकर हत्या कर दी गई थी। इसकी जिम्मेदारी लॉरेंस गैंग ने ली थी। उस वक्त सब इंस्पेक्टर अंग्रेज सिंह मानसा के थाना सिटी-1 के इंचार्ज थे। हालांकि जांच शुरू करने के बाद बीमार होने पर वह रिटायर हो गए थे।

जम्मू-कश्मीर में पाक गोलीबारी के पीड़ित बच्चों से मिले राहुल

● कहा-आई लव यू, सब जल्दी ठीक होगा, आप मन लगाकर पढ़ें

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर के पुंछ पहुंचे हैं। उन्होंने यहां पाकिस्तानी गोलाबारी में मारे गए लोगों के परिवारों से मुलाकात की। वे स्कूली बच्चों से भी मिले, उनका हौसला बढ़ाया और कहा कि मैं आपसे बहुत प्यार करता हूं। राहुल ने कहा कि सब जल्दी ठीक हो जाएगा। आप इन हालात से बाहर आने के लिए खूब पढ़ाई करें, खूब खेलें और स्कूल में बहुत सारे दोस्त बनाएं। पाकिस्तानी गोलाबारी से प्रभावित परिवारों से मुलाकात के बाद राहुल ने कहा कि ये बड़ी त्रासदी है। बहुत से लोगों की जान गई है और उन्हें काफी नुकसान हुआ है। मैंने उनसे बात की, उनकी परेशानियों को समझने की कोशिश की। उन्होंने मुझसे कहा कि वे कुछ मुद्दे राष्ट्रीय स्तर पर उठाना चाहते हैं, और मैं उन्हें जरूर उठाऊंगा।

पहलगाम की बायसरन घाटी में 22 अप्रैल की दोपहर आतंकवादियों ने पर्यटकों पर फायरिंग की थी। हमले में 26 टूरिस्ट मारे गए थे। 10 से ज्यादा घायल हुए थे। इसके बाद भारतीय वायु सेना ने रात को कार्रवाई की थी।

परिक्रमा

निवेश के मामले में आमने-सामने आते 'मोहन' और 'उमंग'

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जब से मध्यप्रदेश की कमान संभाली है तब से वे औद्योगिक विकास पर और अधिक ध्यान दे रहे हैं ताकि प्रदेश में औद्योगीकरण को पंख लग सकें। इसकी एक विशेषता यह है कि मुख्यमंत्री का ध्यान पहले से विकसित महानगर की शक्ल लेते शहरों के साथ ही उन जगहों पर भी ध्यान देना है जो अभी औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। इसका एक अर्थ यह है कि औद्योगीकरण का प्रकाश उन अंचलों तक भी फैलाना है जहां अब इसकी अधिक जरुरत है। इसलिए बड़े-बड़े महानगरों से उन अंचलों व जिलों को भी जोड़ा जा रहा है जहां आधारभूत संरचना को मजबूत करना है। शहरों व कस्बों में जो इसमें आयेंगे वहां पहले मजबूत ढांचागत सुविधाएं बढ़ाने की योजना है। राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार का आरोप है कि निवेश प्रस्ताव सिर्फ कागजों तक ही सीमित हैं। इसका तीखे अंदाज में उत्तर देते हुए सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि नकारात्मक बातें करना कांग्रेस नेताओं की आदत में शुमार हो गया है।

मध्यप्रदेश में औद्योगिक निवेश के प्रस्ताव प्राप्त हो रहे हैं और डॉ. यादव इसके लिए अथक मेहनत भी कर रहे हैं। कर्नाटक में उनके दौरे और 'इनवेस्ट इन एमपी' को लेकर उमंग सिंघार का आरोप है कि 7 हजार 935 करोड़ के निवेश और 18 हजार 975 नौकरियों का वादा किया गया है लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। व्यंग्योक्ति करते हुए उमंग ने यहां तक कहा कि यह निवेश सम्मेलन वैसा ही है जैसे कि शादी के कार्ड बांटे जायें और दूल्हा-दुल्हन का पता ही न हो। उनका यहां तक कहना था कि ग्लोबल इनवेस्टर समिट सिर्फ वायदों का मेला है। इस प्रकार उन्होंने इनवेस्टर समिट 2025 को लेकर सरकार की घेराबंदी की है। उनका कहना था कि अभी तक इसमें भारी भरकम निवेश प्रस्तावों की घोषणा हुई है लेकिन यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि कितने प्रस्ताव धरातल पर उतरे हैं। नेता प्रतिपक्ष के बयान पर सारंग का कहना था कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जो प्रयास किए हैं उनका एक सकारात्मक परिणाम भी सामने आया है। चाहे वह रीजनल इनवेस्टर समिट हो या भोपाल में आयोजित ग्लोबल इनवेस्टर समिट हर एक निवेश का जो प्रयास सरकार ने किया है उसके सकारात्मक परिणाम आये हैं। कांग्रेस नेता यह भूल जाते हैं कि उनके किसी बयान से प्रदेश या देश का सम्मान भी प्रभावित होता है।

शिवराज करेंगे पदयात्रा

पांव-पांव वाले भैया और बहनों के भाई तथा लाडली लक्ष्मी योजना को अपने मुख्यमंत्रित्व काल में जमीन पर उतारने वाले केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को अमलीजामा पहनाने के लिए गांव-गांव की पदयात्रा करने वाले हैं। यह यात्रा रविवार 25 मई को सायंकाल 4 बजे से लाड़कुई गांव से प्रारंभ होगी। अपनी यात्रा के दौरान वे युवाओं, महिलाओं, किसानों एवं आम जनता से सीधा संवाद करेंगे। खेतों में पहुंचकर भी वे किसानों से रुबरु होंगे और उन्हें जैविक खेती को बढ़ावा देने तथा कीटनाशक एवं रासायनिक खाद का उपयोग कम करने और नरवाई नहीं जलाने का संकल्प भी दिलायेंगे। यात्रा के दौरान वे चौपालों में भी शामिल होंगे और लाड़ली बहना व लखपति दीदी से संवाद करेंगे। उल्लेखनीय है कि इस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश की आधी आबादी महिलाओं को भाजपा और एनडीए के पाले में करने के लिए पूरा जोर दे रहे हैं। शिवराज सिंह चौहान इस मामले में अपनी तरफ से अपने लोकसभा क्षेत्र में पदयात्रा कर जहां वस्तुस्थिति का जायजा लेंगे वहीं दूसरी ओर किस प्रकार से सरकार की योजनाओं का लोग अधिक से अधिक लाभ उठायें यह बतायेंगे।

और यह भी...!

आपरेशन सिंदूर भारत की निर्णायक विजय माना जा रहा है क्योंकि रक्षा , वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों की नजर में आपरेशन सिंदूर सामरिक और राजनयिक दृष्टि से भारत की निर्णायक विजय है। सशक्त राजनीतिक नेतृत्व और समृद्ध सैन्य शक्ति से भारत आज न केवल सामरिक रुप से मजबूत हुआ है बल्कि विश्व फलक पर भी प्रभावशाली राष्ट्र के रुप में उभरा है। भारतीय वायुसेना, थल सेना और नौसेना एवं राजनयिक तंत्र की समन्वित रणनीति से सिद्ध कर दिया है कि अब भारत हर चुनौती का जवाब देने में पूरी तरह से सक्षम है। एयर कमोडोर मृगेंद्र सिंह के विचार थे कि वायुसेना ने दुश्मनों के ठिकानों को सफलतापूर्वक निशाना बनाया। यह केवल एक सैन्य सफलता मात्र नहीं अपितु भारत की वायु प्रतिरक्षा और आक्रमण क्षमता की विश्व को दिखाई यह शानदार झलक थी। ब्रिगेडियर संजय घोष का मानना है कि भारतीय सेना ने संदेश दिया है कि किसी भी प्रकार के आतंकी प्रयास या सीमा पर अतिक्रमण को भारत सहन नहीं करेगा। यह अभियान इस बात का प्रमाण है कि भारत अब केवल प्रतिक्रिया ही नहीं बल्कि निर्णायक और प्रबल रुप से नेतृत्वकर्ता है। एनएलआईयू की प्रो. डॉ. राका आर्या का कहना था कि आपरेशन सिंदूर भारत की कूटनीतिक परिपक्वता और वैश्विक रणनीतिक समझ का भी प्रमाण है।

छोला में कोयला भट्टी पर बन रहा था नमकीन

भोपाल की 2 नमकीन फैक्ट्री पर नगर निगम की कार्रवाई, 75 हजार का जुर्माना

भोपाल (नप्र)। भोपाल के छोला स्थित दो नमकीन फैक्ट्री में नगर निगम ने कार्रवाई की है। यहां पर कोयला भट्?टी में नमकीन बन रहा था। इसकी पहले भी कई शिकायतें सामने आई थीं। इसके चलते निगम ने कुल 75 हजार रुपए का जुर्माना किया। प्रदूषण करने को लेकर पहली बार इतना जुर्माना निगम ने लगाया है।

जोन-17 के वार्ड 76 स्थित छोला नगर निगम कॉलोनी में नमकीन की दो फैक्ट्री पर शनिवार को कार्रवाई की गई। निरीक्षण के दौरान एएसओ रामरतन लोहिया ने प्रतिबंधित लकड़ी-कोयला भट्टी के उपयोग करना पाया। वहीं, गंदगी भी पड़ी मिली। इस पर मोहन नमकीन पर 50 हजार और एवं शानवी नमकीन पर 25 हजार रुपए का जुर्माना किया गया।

भोपाल में दस लाख की शराब सहित तीन तस्कर गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। भोपाल क्राइम ब्रांच पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर तीन शराब तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपी 7 सीटर एसयूवी कार से शराब डिलीवर करने जा रहे थे। पुलिस ने आरोपियों की कार को भी जब्त कर लिया है। जिसमें 25 पेटी अवैध शराब रखी थी। जब्त शराब की कीमत करीब दस लाख रुपए है। आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि माता मंदिर मैनिट चौराह पर सफेद रंग की कार को रोककर शुक्रवार की रात को सर्च किया। जिसमें तीन व्यक्ति बैठे हुए थे। तीनों को हिरासत में लेकर पूछताछ की। कार की तलाशी लेने पर पीछे की सीट पर शराब की पेटियां रखी थीं।

राज्यपाल पटेल ने एम्स परिसर का भ्रमण किया

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल आज अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) पहुंचे। एम्स पहुंचने पर उन्होंने चिकित्सालय परिसर का भ्रमण किया।राज्यपाल श्री पटेल ने चिकित्सालय पहुँच कर वहाँ

उपस्थित रोगियों और उनके परिजनों से चर्चा की। उन्होंने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के परिसर में पूर्व में उनके द्वारा रोपित पीपल के पौधे को सिंचित भी किया।

प्रदेश में पारेषण उपलब्धता का नया कीर्तिमान

98 प्रतिशत लक्ष्य के मुकाबले हासिल किया 99.47 प्रतिशत

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में प्रदेश के विद्युत क्षेत्र में ट्रांसमिशन नेटवर्क (पारेषण प्रणाली) की अधोसंरचना के सुदृढ़ीकरण एवं विस्तारीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। इसके फलस्वरूप राज्य में पारेषण उपलब्धता (ट्रांसमिशन अवेलेबिलिटी) को ऐतिहासिक रूप से 99.47 प्रतिशत के उच्चतम स्तर तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त हुई है।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने जानकारी दी है कि मध्यप्रदेश राज्य विद्युत नियामक आयोग द्वारा वर्ष 2024-25 के लिये निर्धारित 98 प्रतिशत लक्ष्य के मुकाबले इस वित्तीय वर्ष में पारेषण उपलब्धता (ट्रांसमिशन अवेलेबिलिटी) बढ़कर 99.47 प्रतिशत तक हो गई है। वर्ष 2023-24 में पारेषण उपलब्धता (ट्रांसमिशन अवेलेबिलिटी) 99.42 प्रतिशत के मुकाबले यह उल्लेखनीय सुधार है, जो राज्य विद्युत कंपनियों की कार्यकुशलता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। प्रदेश के विद्युत क्षेत्र की यह सफलता राज्य के लिए गर्व की बात है, इस उपलब्धि के लिये उन्होंने विद्युत कार्मिकों को बधाई दी है। उन्होंने उम्मीद जताई कि यह उपलब्धि न केवल मध्यप्रदेश में विद्युत आपूर्ति की गुणवत्ता को बेहतर बनाएगी, बल्कि उपभोक्ताओं को अधिक स्थिर और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

विद्युत आपूर्ति की गुणवत्ता होगी बेहतर

श्री तोमर ने कहा है कि एम.पी. ट्रांसको द्वारा किए गए नवाचारों, उन्नत तकनीकी समाधानों जैसे स्काडा प्रणाली, विद्युत ग्रिडों की निगरानी और समय-समय पर रख-रखाव के चलते यह सफलता संभव हो पाई है। कंपनी द्वारा विद्युत नेटवर्क के आधुनिकीकरण और क्षमतावर्धन की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

पारेषण उपलब्धता अधिक होने के फायदे

किसी भी ट्रांसमिशन सिस्टम में ट्रांसमिशन अवेलेबिलिटी (पारेषण उपलब्धता) अधिकतम होने से विद्युत आपूर्ति में बाधाएँ कम होती हैं, जिससे उपभोक्ताओं को निरंतर बिजली मिलती है। इससे औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि होती है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। यह प्रणाली की विश्वसनीयता और दक्षता को भी सुनिश्चित करता है। साथ ही आपात स्थितियों में शीघ्र बिजली आपूर्ति संभव होती है।

एमपी सराफा एसोसिएशन की भोपाल में बैठक

प्रदेश पदाधिकारियों का चयन; भरगट संरक्षक-सराफ अध्यक्ष बने

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश सराफा एसोसिएशन की प्रादेशिक बैठक भोपाल में हुई। इसमें प्रदेश पदाधिकारियों के चयन की प्रक्रिया पूरी की गई। जिसमें मौजूदा कार्यकारिणी को ही आगे भी दायित्व सौंपे जाने का निर्णय लिया गया। इसलिए कोर कमेटी के सभी सदस्यों में सर्वसम्मति से कार्यकारिणी को पुन- चुना।

इसके बाद मध्यप्रदेश सराफा एसोसिएशन के प्रदेश संरक्षक झमक भरगट रतलाम, प्रदेश अध्यक्ष राजा सराफ जबलपुर, प्रदेश महासचिव देवीलाल सोनी आगर, प्रदेश कोषाध्यक्ष संजीव गर्ग (गांधी) भोपाल, प्रदेश उपाध्यक्ष निर्मल वर्मा घुंघरू इंदौर, प्रदेश सहसचिव नरेंद्र रोड़ा विदिशा, प्रदेश कोषाध्यक्ष रविंद्र सोनी उज्जैन का

सर्वसम्मति से पुन- चयन किया गया।

पदाधिकारियों का स्वागत किया- भोपाल सराफा एसोसिएशन के वरिष्ठ सदस्य नरेश अग्रवाल, सुशील धनवानी, विजय वर्मा, आनंद सोनी, रितेश अग्रवाल, सुमंत सोनी, राजेश सोनी, योगेश सोनी, विनीत सिंघल, विक्रम सोनी सागर, राजकुमार सराफ विदिशा आदि ने पदाधिकारियों का सम्मान किया। वहीं, नवचयनित पदाधिकारियों ने एक सप्ताह में प्रदेश की संपूर्ण कार्यकारिणी घोषित करने की बात कहीं।

व्यापारियों के लिए सेमिनार होगा

आगामी महीनों में मध्यप्रदेश सराफा एसोसिएशन के तत्वावधान में प्रदेश के बड़े शहरों में सराफा व्यापारियों को जागरूक एवं शासन की नीतियों से व्यापारियों को अपडेट करने के लिए सेमिनार आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

सराफा व्यापार में एमसीएक्स के महत्व को समझाने के लिए नवीन मृदभटकल बाम्बे ने व्यापारियों को समझाइश दी। साथ ही वैश्विक स्तर पर सोना-चांदी के भाव में हो रही तेजी-मंदी से होने वाले नुकसान को अपने व्यापार को कैसे बचाया जाए एवं अपने व्यापार में मुनाफे को कैसे सुरक्षित रखा जाए, इसके बारे में जानकारी दी गई।

स्कूल से लौटकर छात्रा ने फांसी लगाई

12वीं में 81 प्रतिशत आए थे, मिलने वाले थे स्कॉलरशिप के 25 हजार रुपए

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में रहने वाली 12वीं कक्षा की छात्रा ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। इससे पहले शुक्रवार की दोपहर को वह स्कूल में अपना बैंक खाता नंबर और आईएफएससी कोड देकर आई। उसने एमपी बोर्ड से 81 प्रतिशत मार्कस के साथ 12वीं कक्षा पास की थी। लिहाजा उसे सरकारी योजना के तहत लैपटॉप के लिए 25 हजार रुपए मिलने वाले थे।

यह राशि शनिवार तक खाते में क्रेडिट होने का आश्वासन स्कूल की ओर से दिया गया था। स्कूल से लौटने के बाद वह गुमसुम थी। इसी बीच परिजन घर से बाहर गए और युवती ने सुसाइड कर लिया। हालांकि पुलिस को घटना स्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। शनिवार दोपहर को पीएम के बाद परिजनों को शव सौंप दिया गया है। पुलिस के अनुसार, दीक्षा रजक (18) 12वीं की छात्रा थी। उसके पिता चौकीदारी का काम करते हैं। मां भी घरों में हाउस हेल्प का काम करती है। उसका एक छोटा भाई है, जो सबसे बड़ी बहन के घर गया हुआ था। दीक्षा प्रथम श्रेणी से पास हुई थी। शुक्रवार की दोपहर को घर लौटी, तब गुमसुम थी। इसके कुछ देर बाद मां काम कर चली गई। इसके बाद दीक्षा ने सुसाइड कर लिया।

मां घर पहुंची तब देखा शव

शुक्रवार शाम मां घर पहुंची तो सबसे पहले उन्होंने ही बेटी की लाश देखी। जिसके बाद पुलिस को घटना की जानकारी दी। मौके पर पहुंची पुलिस को सुसाइड नोट नहीं मिला है। जिसके चलते आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस का कहना है कि दीक्षा पढ़ने में अच्छी थी और अच्छे नंबर से पास हुई थी। आत्महत्या क्यों की है इसको लेकर जांच की जा रही है। उसके मोबाइल फोन की जांच के बाद और परिजनों के बयान के बाद ही मामले में खुलासा हो सकेगा।

चाचा का सवाल स्कूल से लौटकर ही क्यों जान दी?

मृतका के चाचा रमाकांत रजक ने बताया कि दीक्षा ने कभी कोई परेशानी का जिक्र नहीं किया। वह पढ़ने में भी अच्छी थी। शुक्रवार दोपहर को स्कूल गई थी। वहां उसने अकाउंट नंबर और आईएफएससी कोड भी दिया। शनिवार को उसे सीएम योजना के तहत 25 हजार रुपए मिलने वाले थे। स्कूल से आने के बाद छोटे भाई को बहन के घर छोड़ा। पिता ड्यूटी पर थे, मां भी काम पर चली गई। इसी बीच उसने यह कदम उठा लिया। पता नहीं स्कूल में उसके साथ कुछ गलत हुआ है। इसके अलावा तो कोई और कारण समझ नहीं आ रहा है। पुलिस केस की जांच कर रही है। जांच में ही मौत के कारणों का खुलासा होने की उम्मीद है।

एमपी में मानसून की एंट्री 15-16 जून को, केरल पहुंचा

मंडला-बालाघाट समेत 9 जिलों से सबसे पहले दस्तक ; ग्वालियर-चंबल संभाग में देर लगेगी

भोपाल (नप्र)। देश में मानसून ने दस्तक दे दी है। शनिवार को मानसून केरल पहुंच गया था। यह अपने तय समय से 8 दिन पहले पहुंचा है। मध्यप्रदेश में भी मानसून 15-16 जून तक एंटर हो सकता है। इससे पहले प्री मानसून की एक्टिविटी जारी रहेगी।

मौसम विभाग के मुताबिक, प्रदेश के दक्षिणी हिस्से यानी मंडला, सिवनी, डिंडौरी, बालाघाट, अनूपपुर, बुरहानपुर, पांढुर्णा, बैतूल, बड़वानी के रास्ते से मानसून दस्तक देगा। ग्वालियर-चंबल में सबसे लेट 25 जून तक पहुंचेगा। भोपाल, इंदौर में यह 20 से 22 जून के बीच आ सकता है।

बता दें कि प्रदेश में मानसून के आमद की सामान्य तारीख 15 जून है। हालांकि, पिछले कुछ सालों से यह 18 से 22 जून के बीच ही पहुंच रहा है। पिछले साल यानी 2024 में मानसून की 21 जून को एंट्री हुई थी। यह 6 दिन देरी से

प्रदेश में पहुंचा था।

दक्षिण-पश्चिम मानसून ने पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी और अनूपपुर जिले में प्रवेश किया था। इस बार भी इन्हीं जिलों से मानसून के आने की संभावना है। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि इस बार मानसून ने 8 दिन पहले ही देश में दस्तक दी है।

इससे पहले 2009 को भी मानसून 23 मई को पहुंच गया था। फिलहाल मानसून के आगे बढ़ने की स्थिति ठीक है। मध्यप्रदेश में इस बार भी समय से पहले या समय पर इसके दस्तक देने की स्थिति बन रही है।मौसम विभाग ने 15 जून को मानसून के मध्यप्रदेश में पहुंचने की संभावना जताई है।

15 जून तक प्रदेश में मानसून आने का अनुमान

मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि मानसून अभी केरल पहुंचा है। अब यह कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र में पहुंचेगा। फिलहाल तो मानसून की स्थिति ठीक है, पर आगे जाकर रफ्तार धीमी भी हो सकती है। हवा की गति और प्रेशर के बाद ही मानसून की सही स्थिति पता चलती है।

कई बार मानसून अटक भी जाता है। इसलिए अब तक का अनुमान यही है कि 15 जून के आसपास मानसून प्रदेश में आएगा। यदि मानसून की गति बेहतर रही तो यह पहले भी आ सकता है। मई के आखिरी में स्थिति और भी क्लियर हो जाएगी।

सागर, विदिशा, बैतूल-सिंगरौली में तेज आंधी, जबलपुर समेत 17 जिलों में बारिश का अलर्ट

मध्य प्रदेश में अगले कुछ घंटों में तेज आंधी और बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग के अनुसार सागर, विदिशा, बैतूल और सिंगरौली में तेज आंधी चलने की संभावना है। आंधी की रफ्तार 50 किलोमीटर प्रतिघंटा या इससे अधिक रह सकती है। इसी तरह हरदा, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, जबलपुर, मंडला, मऊगंज, दमोह, कटनी, सतना रीवा, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडोरी, सीधी में आंधी-बारिश का अलर्ट है।सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि प्रदेश में साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ की एक्टिविटी है। इस वजह से आने वाले सात दिन तक प्रदेश में आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया है।

कहानी

संजय वर्मा दृष्टि'

तुम झूठ तो नहीं बोल रहे

घर की बालकनी की खिड़की खोली बाहर का दृश्य देख मुँह से निकल पड़ा -

देखो चीकू के पापा कितना मनोरम दृश्य है ।

रोज की तरह रजाई ताने बिस्तर से चीकू के पापा ने कहा -

पहले चाय तो बना लाओ । और सुनो, अखबार आ गया होगा वो भी लेती आना। दुनिया में कई जगह ऐसी है जहाँ की प्रकृति खूबसूरत है ।

हर साल सोचते आए की अब चले किन्तु जीवन की भाग दौड़ में समय निकालना मुश्किल करवा चौथ के दिन मंजू सज धज के पति का इंतजार कर रही शाम को घर चीकू के पापा आएंगे तो छत पर जाकर चलनी में उनका चेहरा देखूंगी।मंजू ने गेहूं की कोठी मे से धीरे से चलनी निकाल कर छत पर रख दी थी।चूँकि गांव में पर्दा प्रथा की परंपरा होती है साथ ही ज्यादातर काम सास -ससुर की सलाह लेकर ही करना,संयुक्त परिवार में सब का ध्यान भी रखना और आँखों में शर्म का पर्दा भी रखना होता है।पति को बुलाना हो तो पायल ,चूड़ियों की खनक के इशारों ,या खांस कर ,या बच्चों के जरिये ही खबर देना होती ।चीकू के पापा घर आए तो साहित्यकार के हिसाब से वो मंजू से मिले।कविता के रूप में करवा चौथ पर मंजू को कविता की लाइन सुनाने लगे -

आकाश की आँखों में /रातों का सूरमा /सितारों की गलियों में /गुजरते रहे मेहमां/ मचलते हुए चाँद को/कैसे दिखाए कोई शमा/छुप छुपकर जब/ चाँद हो रहा हो जवां ।

कविता की लाइन और आगे बढ़ती इसके पहले माँ की आवाज अंदर से आई -

÷कही टीवी पर कवि सम्मेलन तो नहीं आ रहा ,शायद मै, टीवी बंद करना भूल गई होंगी । मगर ,लाइट अभी ही गई और मै तो लाइट का इंतजार भी कर रही हूँ फिर यहाँ आवाज कैसी आ रही फिर आवाज आई- आ गया बेटा । बेटे ने कहा -हाँ ,माँ मै आ गया हूँ । अचानक लाइट आ गई । उधर सास अपने पति का चेहरा देखने के लिए चलनी ढूंढ रही थी,किन्तु चलनी तो मंजू बहु छत पर ले गई थी।और वो बात मंजू के सास ससुर को मालूम न थी ।जैसे ही मंजू ने चीकू के पापा का चेहरा चालनी में देखने के लिए चलनी उठाई।तभी नीचे से मंजू की सास की आवाज आई -बहु चलनी देखी क्या? गेहूं छानना है । बहू ने जल्दबाजी कर पति का और चाँद का चेहरा चालनी में देखा और कहा - 'लाई माँ ' ।चीकू के पापा ने फिर कविता की अधूरी लाइन बोली -

याद रखना बस /इतना न तरसाना /मेरे चाँद तुम खुद /मेरे पास चले आना ।

इतना कहकर चीकू के पापा भी मंजू की पीछे -पीछे नीचे आ गए । अब मंजू की सासु माँ , मंजू के ससुर को ले कर छत पर चली गई । अचानक सासु माँ को ख्याल आया कि -लोग बाग क्या कहेंगे । लेकिन प्रेम और आस्था और पर्व उम्र को नहीं देखते । जैसे ही मंजू के ससुर का चेहरा चालनी में देखने के लिए सास ने चलनी उठाई। अचानक मंजू ने मानो छक्का जड़ दिया।वो ऐसे - नीचे से मंजू ने सास की तरह आवाज लगाई- माजी आपने चलनी देखी क्या ? आप गेहूँ मत चलना में चाल दूंगी । ये बात सुनकर चलनी गेहूं की कोठी में चुपके से कब आ गई कानों कान किसी को पता भी न चला।मगर ऐसा लग रहा था कि चाँद ऊपर से सास बहु के चलनी खोज का करवा चौथ पर खेल देख कर हँस रहा था और मानो जैसे कह रहा था।मेरी भी पत्नी होती तो मै भी चलनी में अपनी चांदनी का चेहरा देखता ।

करवाचौथ की रात मंजू श्रृंगार से ऐसे लग रही थी।मानों कोई अप्सरा धरती पर उतरकर आई हो।चीकू के पापा ने बड़े प्यार से पूछा -मंजू क्या मांगना चाहती हो । आज जो भी तुम कहोगी ,मुझे मंजूर होगा।परंतु खुशी के मरे मंजू घूमने ले जाने वाली बात कहना ही भूल गई ।मंजू कहा -

सुनोजी ,आप मुझे नई महँगी साड़ी कल ला कर देना और वो भी गुलाबी कलर वाली।अपनी पड़ोसन के पास तो एक से एक महंगी साड़ियां है और मेरे पास एक भी नहीं । चीकू के पापा ने सोचा कि -अच्छा ही हुआ,घूमने ले जाने वाली बात भूल गई और मै कम पैसे में इसकी बात को मान गया।यदि घूमने जाने का कहती तो मुझे ऑफिस से पार्ट फाइनल से पैसा निकलना पड़ता और वो भी ज्यादा ।

मंजू ने धीरे से मस्का लगा कर कहा की -

अजी सब गर्मियों की छुट्टियों में हिल स्टेशन पर जाते है ।अब की बार सब साथ में चलेंगे।चीकू के पापा ने कहा की - इस बार मनाली का प्रोग्राम बनाएंगे । इतना कहना था की मंजू ने आखिर पूछ ही लिया -सुनों ,तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे हो घर के आसपास घूमने जाने की बात फैल चुकी थी।तैयारियां और खरीदारी में कोई कसर बाकी नहीं रही।कुछ नगद तो कुछ उधार लेते वक्त लोगों को घूमने जाने वाली बात भी खुशी के मारे मंजू सबसे कहना नहीं भूले।मंजू सोचने लगी की अब की बार अपनी पड़ोसन को घूमने जाने वाली और वहां से आने के बाद ही इस बात का राज खोलूंगी । वे हर साल घूमने आती और वहां की खूबसूरती और मिलने वाली चीजों की तारीफ कई दिनों तक सबसे शेयर करती रहती । अबकी बार ढेरों सामान की खरीददारी और वहां के मनोरम दृश्यों की तस्वीरें अपने साथ लाएंगे।ख्वाब सजाते सजाते घूमने जाने के दिन नजदीक आते गए।ससुराल से खबर आई की- सांस बीमार है एक बार देखने आ जाओ ।उनसे ज्यादा उम्र में चला फिरा नहीं

जाता और बीमार तो भला कैसे काम चलेगा।उनको संभाल की भी तो आवश्यकता होती है।ये बात पडोसी ने खबर के तौर पर उन तक भिजवाई थी ,उन्होंने अपना पड़ोसी धर्म निभाया।सुबह बैग तैयार कर ससुराल चल दिए।वहां सांस की तबीयत के बारे में विस्तार से पूछा।सास कहा जब तक साँस है तब तक आस है।सास ने दामाद जी से कहा की - मंजू को दामाद जी महीने में एक आध बार मेरे पास भेज दिया करो । मन को सुकून मिल जाता है।दामाद बेचारा सोचने लगा की -मेरे समय पर खाने और ऑफिस जाने के अलावा बच्चों को स्कूल भेजने की कैसे व्यवस्था होगी । दामाद जी ने कहा की - कोई बात नहीं मै मंजू को आपके पास महीने में दो चार दिनों के लिए भेज दिया करूँगा ।मंजू ने धीमे स्वर में कहा कि -सुनो ,तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे।अरे मंजू कैसी बात करती हो -मै क्या तुमसे झूठ बोलूंगा।भले ही हम हिल स्टेशन अगले साल जाएंगे किन्तु इस वक्त घूमने से ज्यादा संभाल की आवश्यकता है । मंजू असमंजस में पड़ गई ।उसकी स्थिति दो नावों में सवार पैर रखने जैसी हो गई ।क्योकि मंजू ने अपनी पड़ोसनों को अपनी माँ के बीमार होने की खबर को छुपा रखा था । वो उनसे हिल स्टेशन का घूमने का बता कर मायके गई थी । जब वापस लौटी तो सब पड़ोसन और जान पहचान वाले उनके घर आ पहुंचे । और वह के हाल चाल जानने लगे। मंजू,हिल स्टेशन कैसा लगा और हमारे लिए वहां से क्या लाई । मंजू ने झूठ में ही कहा कि हमारे पैसे गुम हो गए थे । इस की चिंता में हम कुछ भी खरीदारी नहीं की । वो तो भला हो एटीएम कार्ड जो इनके जेब में रखा था ,बस उसके आधार पर ही सब कुछ हो पाया।स्कूल से बच्चे आए तो आंटी के बच्चों ने आखिर पूछ ही लिया - क्यों चीकू बड़ा मजा आता है ना हिल स्टेशन पर । चीकू ने कहा- आता होगा मुझे क्या मालूम । चीकू के दोस्तों ने कहा कि -काहे की हमसे मजाक कर रहा है और हमें बेवकूफ बना रहा है।

चीकू बोला- यार ,मेरी नानी बीमार थी,उन्हें देखने के लिए पापा मम्मी के साथ गया था।मंजू का चेहरा सबके सामने उतर सा गया।बात को संभल कर मंजू बोली - हमारा प्लान थोड़ा आगे बढ़ गया है।माँ के बीमार होने ।भला ,ऐसे में क्या घूमा जा सकता है।नहीं ना।आप लोग ही बाद में बोलोगी की -देखो माँ को बीमार को छोड़कर घूमने ने गई।सब ने अपनी गर्दन हिलाकर सहमति व्यक्त की।कुछ दिनों बाद चीकू की नानी का स्वर्गवास हो गया।वापस ससुराल जाना हुआ और कार्यक्रम पश्चात वापस आना।इस तरह एक वर्ष बीत गया।चीकू की नानी की प्रथम पुण्यतिथि पर दामाद -लड़की घर के और भी सदस्यों के संग अखबार में फोटो श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु प्रकाशित हुई । सब जान पहचान वाले संवेदना प्रदर्शित करने और ढांढस बधाने हेतु आए ।वापस गर्मी के दिन आगए।मंजू ने फिर खिड़की में झांक कर बाहर का नजारा देखा -तो मुहँ से हिल स्टेशन पर घूमने वाले बात आ ही गई।उधर चीकू की परीक्षा और उसे हल्का सा बुखार।डॉक्टर की लिखी दवाई देने के बाद उसे परीक्षा हेतु स्कूल ले जाना और वापस घर लाना एक जिम्मेवारी का काम भागदौड़ की जिंदगी में अलग से शामिल हो गया।सब पैसे नदारद।पैसे मानो सांप -सीढ़ी का खेल खेल रहे हो जिंदगी के साथ।घर के चक्रव्यूय और ऑफिस के कामों ने चीकू के पापा को उलझा सा दिया।सुलझाने का प्रयास करते तो और उलझ जाते । जैसे इंसान कीचड़ में फंस जाता तो निकलने मे और अंदर धंसता जाता।खैर ,जिंदगी शायद इसी को कहते है जिसमे उतार -चढाव न होतो भला ,क्या काम की जिंदगी ।चीकू के पापा को एक दिन ख्याल आया की रोज झूट बोलने से भी क्या फायदा ।ये मृगतृष्णा सी स्थिति बनती जा रही है । चीकू के पापा घर आकर मंजू से बोले -देख मैं तेरे लिए क्या लाया हूँ । जब चीकू के पापा ने हिल स्टेशन वाला वीडियो मंजू को दिखाया और कहा -ये फलाना हिल स्टेशन है कितना अच्छा लग रहा है ना।मंजू घर की घुटन भरे माहौल से निकलकर खुली ताजा हवा में साँस लेना चाहती थी । वो ऐसे से थोड़ी मानती।उसने कहा - श्रीमानजी मैं कोई दूध पीती बच्ची नहीं हूँ जो आप मुझे इस तरह समझा सको । मै तो इस हसे जा कर ही रहूंगी।चीकू पापा ने तो जिद्द के आगे आत्मसमर्पण कर ही दिया।सारी तैयारियां कर ली गई । सुबह जाना है।मंजू अडोस -पड़ोस में बता रही थी - हम कल सुबह घूमने जायेंगे।

रात को टीवी पर समाचार देखा।जिस स्थान पर जाने वाले थे।वहां के क्षेत्र में भूकंप के झटके आ रहे थे ।असमंजस की स्थिति निर्मित हो गई।वे नजदीक के स्थान में घूमने जाने के लिए निकल गए।घूम के आने के बाद जान पहचान वाले हाल चाल जानने के उत्सुक थे । वे चीकू के घर गए।मंजू से पूछा -वहां तो बर्फ की पहाड़िया देखने में बहुत मजा आया होगा ना।भाई हिल स्टेशन की बात ही कुछ और होती है।फोटो देखी तो उसमे बर्फ और हिल स्टेशन का दूर दूर तक पता न था।फिर महिलाओं ने पूछा की ये जगह कौन सी है । तब झूठ बोल कर बताया ये हिल स्टेशन के नीचे की जगह है और हमारा कैमरा खराब हो गया था तो वहां की तस्वीर ले नहीं पाए।झूठ की बौछार हो रही थी।इतने में चीकू के पापा ने बीच में बात करते हुए बोल दिया - हम अगली बार हवाई जहाज से विदेश घूमने जाएंगे।तभी मंजू के दिमाग में एक लहर सी उठी।उसने धीमे से अपने पति के कानों में फुसफुसाया -सुनो , तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे ।

पूरी जिंदगी जीवन के भागदौड़ में ऐसी उलझी की वो महज सपने ही देखते रहे और पूरी उम्र ही निकल गई ,दिलासा देते- देते।चीकू के पापा और मंजू बुजुर्ग हो गए थे । उनसे अब हिल स्टेशन पर चढ़ा जा नहीं सकता ।चीकू के पापा सेवानिवृत्त हो चुके और सेवानिवृत होने पर शासन की और से तीर्थ घूमने का लाभ भी मिलने का योग भी आया । मगर स्वास्थ्य ठीक नहीं होने से वे जाने में असमर्थ थे।वे जवानी के दिनों में ही हिल स्टेशन का वीडियो बरसों पहले बाजार से बना लाए थे।आज उसी को देखकर खुश हो रहे थे।

हार गया मुल्क, जीत गया सेनाध्यक्ष

व्यंग्य

सुदर्शन कुमार सोनी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पाकिस्तान में इन दिनों जीत और हार की एक नयी ही परिभाषा गढ़ी जा रही है। वहाँ अगर सेना युद्ध हार जाए, दर्जन भर एयरस्ट्रिप उड़ जाएं, जवान चौकी छोड़कर भाग जाएं। तब भी कोई रातोंरात पदौन्नत हो सकता है।

हाल की चार दिनी लड़ाई में भारत से मुंह की खाकर, 11 एयरस्ट्रिप गंवाने के बाद भी सेनाध्यक्ष आसिफ मुनीर को फील्ड मार्शल के पद पर पदौन्नत कर दिया गया। यानी देश की पराजय , पर सेनाध्यक्ष की जय हुई। इससे पहले भी रिटायरमेंट से ठीक 48 घंटे पहले उन्हें सेनाध्यक्ष बनाया गया था। दो दिन वहां दो-दो सेनाध्यक्ष थे। माने जैसे ट्रेन छूटने ही वाली थी, तभी उन्हें प्लेटफॉर्म से खींचकर इंजन पर बैठा दिया गया कि जाइये अब आप ही ड्राइवर!

सोचिए, अगर यही परंपरा जारी रही तो आने वाले दिनों में पाकिस्तान में 'पराजय प्रबंधन' की भी पढ़ाई होगी। उसमें पहला चैप्टर होगा 'मुनीर मॉडल हारो और हीरो बनो!' व 'हार हार नही व्यक्तिगत जीत का हार'

इधर आम अवाम आटे के लिए लाइन में खड़ी है, उधर जीएचक्यू में मुनीर साहब की जीत के जश्न में बिरयानी व गुलाब जामुन परोसे जा रहे हैं। कुछ लोग कह रहे हैं कि ये पाकिस्तान के इतिहास की सबसे शर्मनाक हार है। घुटने टेकने की बात पर जनरल साहब के समर्थक कह रहे हैं ये रणनीतिक संयम का हिस्सा था, वर्ना हम तो दिल्ली तक पहुंच जाते ! आप जानते हैं कि हम परमाणु ताकत हैं इसलिए परिपक्वता का परिचय देना ही पड़ता है। बार-बार हम परमाणु ताकत हैं दोहराना ही वहां की परिपक्वता है ?

अब सवाल युद्ध क्यों हारे, का न होकर ,ये है कि इतने शर्मनाक प्रदर्शन के बाद भी अगर कोई फील्ड मार्शल बन सकता है, तो भविष्य में शायद कोई सेना अधिकारी अपने ही टैंक को बम से न उड़ा दे, ताकि वो प्रमोशन पा सके। पाकिस्तान में अब काबिलियत पर नही , कामयाबी की कहानी गढ़ने पर पदौन्नति मिलती है। मतलब युद्ध हारने वाले को वीरता पदक, और सवाल पूछने वाले को देशद्रोही घोषित कर दो।

वहां की अवाम बेचारी सिर पकड़कर बैठी है - न रोटी,

न पेटोऊल , ना शांति, ना रोजगार। मुनीर अरबी/फारसी मूल का शब्द है जिसका अर्थ होता है प्रकाश देने वाला। सही है उन्होने हिन्दु मुस्लिम बिल्कुल अलग-अलग हैं कि अलग ही व्याख्या कर नया प्रकाश डाला है। इसी प्रकाश को भारत ने ब्रम्होस की विनाशक अग्नि बना उनके ग्यारह एयरबेस पलक झपकते उड़ा दिये। कभी वो रिटायरमेंट से पहले आर्मी चीफ बने, अब हार के बाद फील्ड मार्शल। और कोई देश होता तो वहां कोर्ट मार्षल होता। अगली हार पर शायद उन्हें पाकिस्तान का संविधान सलाहकार बना दिया जाएगा , ताकि वो हार को संवैधानिक अधिकार तथा झूठ को राष्ट्रीऊय गुण घोषित कर सकें।

पाकिस्तान की इकानामी सिकुड़ रही है पर जनरल साहब का रुतबा फैल रहा है। ऐसा लगता है जैसे हार अब राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बन चुकी है। जो देश असफलताओं का उत्सव मनाने लगे, वहाँ जीतने वाले लोग अपराधी नजर आते हैं। जो देष झूठ बोलने में गोयबल्स से आगे निकल जाए वहां सच अपराध हो जाता है। वहां संस्थाओं से बड़े व्यक्ति हो जाएं वहां तानाशा ही हावी हो जाती है। पाकिस्तान में अब हर हार के पीछे एक जनरल की जीत होगी।

अब पाकिस्तान आर्मी का मोटटो होना चाहिए कि डाऊन मिसाईलें चटकवाएं , रनवे गंवाएं एक और पदोन्नति पाएं! फील्ड मार्शल बनने का शॉर्टकट बस एक युद्ध में खुलकर हार जाओ! अब वहां हॉकी व क्रिकेट टीम के जेहन में चल रहा खौफ खत्म हो जाएगा। आगे से वे हारेंगे तो कप्तान को सुपर कप्तान घोषित कर दिया जाएगा। 250 के लक्ष्य के विरूद्ध 100 पर ही आल आऊट हो जाने पर भी बार-बार कह सकते हैं कि हमारा पलड़ा भारी रहा। जीते भी हम ही हैं। अब कप्तान अपनी सेंचुरी पर ध्यान केन्द्रित करेगा भले ही टीम मैच हार जाए।

इतिहास पूछेगा वो कौन था जो हार कर भी ताज पहनता रहा? फील्ड मार्शल का पद अब वीरता नहीं, व्यवस्था पर व्यंग्य बन चुका है। जंहा सेना सत्ता का पंहुच मार्ग हो जाए तो युद्ध नतीजे नहीं, पदनाम तय करने लगते हैं। इस हार के बाद बेचारे शाबाज शरीफ को भी प्रमोशन ले लेना चाहिए। उन्होने सेनाध्यक्ष मुनीर को अपने केबिनेट से अनुमोदन दिलवाया अब वे मुनीर के केबिनेट यानि सेना से अपने आजीवन प्रधानमंत्री बने रहने का अनुमोदन करवा सकते हैं।

मत चूकिए शाबाज शरीफ जी अभी हार ताजी-ताजी है।

धूल

लघुकथा

सुरेश सौरभ

सड़क पर पड़े उस युवक के सिर से तेज रक्त की धार बह रही थी। उसकी बाइक सड़क पर धूल चाट रही थी। उसमें लगा वह धार्मिक झंडा भी धूल-धूसरित हो चुका था।

पुलिस की गाड़ी वहाँ आयी, उसे अस्पताल ले गयी। उसके घरवाले भी वहाँ पहुंचे। डॉक्टरों देखा, कहा-सौरी बड़ी देर कर दी, यहाँ लाने में, थोड़ी देर पहले ले आते, तो शायद बच जाता ?

मृतक युवक की माँ रोते-कलपते हुए बोली-वहाँ सब लोग, क्या पुलिस का ही इंतजार कर थे। क्या मेरे बेटे को उठाने वाला, वहाँ कोई आम आदमी न था ?

पुलिस-थे, पर उस पूरी गली में आप के धर्म के लोग न थे और हमें एक्सीडेंट की सूचना देर से मिली इसलिए.....?

पूरा रक्त से सना हुआ, वह धार्मिक गमछा, उस निचेष्ट युवक के गले में अब भी मजबूती से लिपटा था, अब उस पर मक्खियाँ भिनभिना रहीं थीं। युवक के परिजन दहाड़े मार कर रो रहे थे। अचानक तभी पूरे अस्पताल की फर्श जैसे दहलने लगी, धार्मिक नारों का समवेत स्वर हवा में गूंज उठा। धार्मिक गमछे डाले उन युवाओं की आंखें जैसे अंगारे बरसा रहीं हो। उनके समवेत स्वरों से मृत युवक के परिजनों के दिलों पर अब मरहम लगने लगा।

राजकुमार कुम्भज की दो कविताएँ

कौन-सा रंग है ये - एक

कौन-सा रंग है ये कौन-सा?
धूप में चाँदनी और चाँदनी में धूप-सा ?
घर में मेले-सा, मेले में अकेले-सा?
बनते बिगड़ते सपने-सा कुछ-कुछ?
कुछ-कुछ वैसा ही, जैसा कभी सुना नहीं
कुछ-कुछ वैसा ही, जैसा कभी देखा नहीं
बिर भी चलती जाती हैं सलाईयाँ कुछ-कुछ
बुनता जाता है स्वेटर कुछ-कुछ
मन, मीरा हो जाता है, गाने लगता है
वक़्त -बेवक़्त बाँसुरी बजाने लगता है
परिजन छूट जाते हैं पीछे बहुत पीछे
चाक-चौबंद चौराहे सब हो जाते हैं ध्वस्त
रेड लाइट के ऊपर से उड़ जाती है साइकिल
रंग -बिरंगे गुब्बारे छूने लगते हैं आसमान
लापता-सा पता ढूंढ़ता हुआ लापता-सा
खोया जीवन खो गया, कब,कहाँ मिलेगा, क्या पता?
मगर नहीं पानी से ज़रा भी बाहर मछली-जीवन
पानी जो प्रेम जैसे वन-प्रांतर में प्यासा मृग
कौन-सा रंग है ये कौन-सा?

कौन-सा रंग है ये - दो

जलाशय के पास हूं, प्यास हूं
नाम नहीं हूं, एहसास हूं, आसपास हूं
आग हूं तो अंदर हूं, समंदर हूं तो अंदर हूं
सुलगता हूं, धधकता हूं, जूझता हूं कभी
कभी पुकारता हूं और खो जाता हूं
कभी जागते- जागते जंगल में ही सो जाता हूं
कौन-सा रंग है ये कौन-सा, पता नहीं ?
अंधों की बस्ती में रोशनदान की तरह
खुल जाए खिड़की तो दिखाई दे जाए ब्रह्मांड
तैरने में कठनाईयां, डूबे तो पार
बार- बार, लगातार, अश्रुधार, अपरम्पार
सावन की तपन-सा, फूलों की चुभन-सा
भूखे शेर की माँद में निर्मल, निर्बल, निर्भय-सा
कौन-सा रंग है ये कौन-सा ?

बांध लेना इस तरह

तनुजा चौबे

तुम्हें हदों में बाँधना है कुछ इस तरह,
झुक रहा हो आसमाँ धरा पर जिस तरह।

छू न सको, बिखर जाओ खुशबू की तरह,
मिल न सको, रह जाओ दो किनारों की तरह।

तमन्ना होगी तुम्हें बहुत बरसने की,
रूप न बिगड़े, बरसना कुछ इस तरह।

झुक कर आए हो जिस चाहत की तलाश में,
लौट न जाना बिना बरसे बादल की तरह।

ठहर जाओ पल भर उस भीगे मौसम में,
प्रेम न गुजर जाए ढलती शाम की तरह।

छुपा लो दिल में मुझे किसी राज़ की तरह,
न बिखर जाऊँ पतझड़ के फूल की तरह।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वादा करने में आखिर जाता ही क्या है

वक्रोक्ति

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भाई अच्छे नेता होते हैं। जिनके पास वादे होते हैं। जिनके पास वादे नहीं हैं वह अच्छे नेता नहीं है। चुनाव में केवल वादे होते हैं जो निभाए कभी नहीं जाते और बस जनता को चूना लगा दिया जाता है। जमीनी नेता अक्सर बात निभा ले जाता है। लोकतंत्र में जनता की आस्था बनी रहे इसलिए वादे किए जाते हैं।चुनाव से पहले वादे की कई भाग होते हैं। चुनाव बाद बड़े भाग से वादे पूरे होते हैं। कुछ झूठे वादे होते हैं जिनसे वे अपने भोले भाले जनता को भरमाते हैं। कुछ वादे सामान सा होते हैं। जनता को वादे बेच दिए जाते हैं।दाम ज़रूरी नहीं सब सही हों। समझदार जनता आसानी से चक्कर में नहीं आते। चुनावी वादे कभी पूरे नहीं होते क्योंकि पूरे हो जाएंगे तो पांच साल बाद कौन सा वादा करेंगे। नेता के विरुद्ध लोग उठ खड़े होते हैं। लेकिन नए वादे के चारा में फंस जाते हैं। नेताओं के झूठे दावों और भ्रामक पोस्टरों से भ्रमित जनता विवेकहीन रह जाती है। लेकिन अभी तक नेताओं के झूठे वादों के खिलाफ कोई जंग नहीं लड़ा जा सका है। सो हमारे नेता धड़ल्ले से झूठे वादे करते रहते हैं, भोली जनता को बरगलाते रहते हैंऔर चुनावी दंगल जीत जाते हैं।

चुनावों के दौरान वादों की जुमलेबाजी की पाजी नेता करते रहते हैं। यह भाषण में देखते ही बनती है। कोई पार्टी विकास का वादा करता है लेकिन कोई बेरोजगारों को रोजगार देने की बात नहीं करता है। वे इतना भी नहीं सोचते कि बेरोजगार बेचारा कैसे विकास करेगा? परिवार चलाने के पैसे कहाँ से लाएगा ? लेकिन वादा करने में नेताओं का भला क्या जाता है। मुँह उठाया और वादा कर दिया। भुगतने वाले भुगतें ! चुनाव में मतदाताओं को शुद्ध-ब्रांडी बाटेंगे, भले ही आप पीते न हों। भाई न पीने वालों का घाटा और नहीं देंगे बेचारे को दो जून का आटा। ऐसा नहीं है कि उनके सभी वादे झूठे ही होते हों। कुछ वादे बेशक निभाए भी जाते है। लेकिन न भी निभाए जाएं तो कोई मलाल नहीं किसी को। नेताओं के भाषण से जनता लाल है, यही बात लोकतंत्र में कमाल है। जनता को भरमाने के लिए नेताओं का वादे करना मामूली बात है। इन वादों से भाषण सजे रहते हैं। वादे में फायदा जादे है।वादों का यह सिलसिला चुनावी मौसम में बरसता है। वादा करने में आखिर जाता ही क्या है? माइक पकड़ा और झट से कर डाला वादा!

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

'ऋतस्य': मूर्त, अमूर्त, प्राचीन, नवीन जैसे तथ्यों की प्रदर्शनी

कला काल और समय से परे की वस्तु नहीं है पर सच ये भी है कि काल और समय में बंधी भी नहीं है कला। कला शब्द की उत्पत्ति ऋग्वेद से है तो प्रस्तुत प्रदर्शनी को उस गहराई तक पहुंचाने हेतु, इसका जुड़ाव ऋग्वैदिक परिप्रेक्ष्य तक पहुंचाने हेतु जिसके पीछे काफी कार्य हुआ है और वो चाहे कलाकृतियों के सृजन को लेकर हो या प्रदर्शनी के शीर्षक को लेकर, अध्ययन और आध्यात्म के साथ ही प्राचीन से आधुनिक तक का सफर भी हुआ है। प्रस्तुत प्रदर्शनी का शीर्षक ÷ऋतस्य÷ जो मुख्य रूप से ऋग्वेद से है, हालांकि चारों वेदों में अलग-अलग परिप्रेक्ष्यों में भी इसका प्रयोग मिलता है और कई जगह मिलता है। 'ऋतस्य' सृष्टि के नियमों, व्यवस्था, अनुष्ठानों, सत्यता, अनुक्रमता, सहित कई मायनों में अहम भूमिका निभाता है। वेदों में अधिकांश जगहों पर ऋत को सृष्टि का मूल माना गया है। कहीं-कहीं ब्रह्म के समकक्ष भी देखा गया है इस शब्द को।

'ऋतस्य पथि वेधा अपायि' (6/44/8) में

ऋत अथवा सत्य के मार्ग पर चलकर ही ज्ञानियों द्वारा जगत रक्षा की बात को भी दर्शाया गया है। प्रस्तुत प्रदर्शनी के कृतियों में उपरोक्त में से कोई न कोई रूप जरूर देखा जा सकता है जहां आठ कलाकारों के कृतियों से रूबरू होने का मौका है और जो निकोलस रोएरिक कला दीर्घा कुल्लू मनाली में 23 से 25 मई के बीच प्रदर्शित है। कलाकार बप्पादित्या रॉय चौधरी के कृतियों में रंगों और उसके बनावटो को सामंजस्यतापूर्ण तरीके से समझा जा सकता है। बोल्ड रेखाओं और चटख रंगों के साथ प्रकृति को बिल्कुल ही नजदीक से, जूम करके देखा जा सकता है। इनके कैनवास पर रंगों के कई घटक एक साथ काम करते हैं, फूल, पत्ती, डालियों को भी बिल्कुल ही साफगोई के साथ दर्शाया गया है। इन सभी के अलावा अगर कहा जाए कि कला के सभी तत्वों को समाहित भी किया गया है तो गलत नहीं होगा। उनका कहना है कि मेरी कलात्मक यात्रा में, मैं रंगों और बनावटों को सामंजस्यपूर्ण तरीके से चित्रों में मिलाता हूँ, उत्कट ऊर्जा के साथ, मैं कैनवास पर रंग लगाता हूँ, जिससे एक जीवंत अंतर्क्रिया बनती है। मैं एक साथ कई घटकों पर काम करता हूँ, विभिन्न दिशाओं की खोज करता हूँ। चुनौती जीवंत लेकिन सुसंगत सार को जगाने के लिए तत्वों को संतुलित करने में है। मेरी पेंटिंग्स का उद्देश्य व्यक्तिगत रूप से प्रतिध्वनित करना है, दर्शकों को उनकी कहानियों की व्याख्या करने के लिए आमंत्रित करना है। बप्पादित्या के कृतियों में दर्शक अपनी तरफ से व्याख्या करने में पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं% निडरता से संभावनाओं को तलाशते हुए, आप कला के माध्यम से एक गहन संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं, जो मानवीय विविधता को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण का भी कार्य करता है। कलाकार, कवि एवं कला समीक्षक पंकज तिवारी के कृतियों में जीवन और मृत्यु के बीच का पूरा संसार है। रहस्यमय जीवन, संघर्षमय जीवन, खुशहाल जीवन, अच्छाइयाँ-बुराइयाँ सभी कुछ है जो निरंतर अलग-अलग कृतियों में प्रवाहित है, सही-गलत, अच्छा-बुरा, सुबह-शाम जैसे भावों को पटल पर रखने वाले कलाकार पंकज तिवारी के अधिकतर कृतियों का शीर्षक भी हाफ लाइफ इन्हीं सब गुणों को देखकर रखा जाता जान पड़ता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक का पूरा सफर इनके कृतियों में नजर आ जाता है। अधिकतर गहरे रंगों का प्रयोग इनकी विशेषता है पर उससे भी बड़ी विशेषता उसी गहरे में से झांकते अंजोर को आतुर प्रकाश का भी प्रयोग है। गहरी, घनेरी और डरावनी रात के बाद सुबह की जो उम्मीद है वो इनके कृतियों में भी साथ झलकती है। कलाकार पूजा राज के कृतियों में भी जीवन के तमाम जटिलताओं से उलझती, सुलझती पहेलियों के साथ आध्यात्मिक यात्रा है। जड़, चेतन, योग, ध्यान, मन की शान्ति के साथ सुकून से भरा उड़ान, मनोहर रंगों में उसकी प्रस्तुति दर्शकों को जल्दी अपनी तरफ जोड़ने में सहायक होती है। उनकी कला अद्वितीय दृश्यों वर्णन प्रस्तुत करती है, जो व्यक्तिगत अस्तित्व की जटिलताओं और मानव जीवन को आकार देने वाली भावनाओं पर केंद्रित है। पूजा के कृतियों में यथार्थवाद और अर्ध यथार्थवाद का मिश्रण

है, जिसमें जीवंत रंगों का उपयोग है जो उनके विषय को गहराई और संवेदनशीलता दोनों प्रदान करता है। उनकी कला मानवीय रिश्तों और सामाजिक गतिशीलता से लेकर विशाल ब्रह्मांड में मानव जीवन की आध्यात्मिक यात्रा तक विभिन्न विषयों की खोज करती है। पूजा की कृतियाँ समाज और राजनीति के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों के साथ-साथ सतह के नीचे छिपी हुई अनकही भावनाओं और संवेदनाओं को भी उजागर करने में सक्षम है। मन के भीतर चल रहे द्वंद्वात्मक परिस्थितियों पर भी विजय की बात रहती है उनकी कलाकृतियाँ। ÷मैंने प्रकृति में होने वाली विभिन्न प्राकृतिक गतिविधियों को खोजने और व्यक्त करने का प्रयास किया है। मेरी पेंटिंग की अवधारणा प्रकृति है। अपनी पेंटिंग के माध्यम से मैंने एक कल्पनाशील वातावरण बनाने की कोशिश की है जहाँ हवा, रंग और कंट्रास्ट की भावना को एक रूप द्वारा उजागर किया गया है÷ कलाकार सुप्रियो नंदी के यही विचार उनके अधिकतर कृतियों में दर्शित है। पेड़, पौधे, पहाड़, नदियाँ सभी बिल्कुल ही गतिशील अवस्था में दर्शित है इनके यहाँ। कलाकार सुरेश हंस कहते हैं कि मेरे लिए फोटोग्राफी एक आंतरिक यात्रा की तरह है। जब भी मैं किसी अनोखे दृश्य को कैमरे में कैद करने के लिए फोकस करता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी ध्यान की अवस्था में चला गया हूँ। आँखों से मस्तिष्क तक की यात्रा में, मन के विचार जिस क्षण में होते हैं, वह कैद हो जाता है। यह एक अद्भुत अनुभव है। आँखों और मस्तिष्क के इस अद्भुत संबंध को केवल एक फोटोग्राफर ही समझ सकता है। मेरे लिए फोटोग्राफी मेरे लेखन का भी एक हिस्सा है। एक तस्वीर कैमरे में बनती है और उसी समय दूसरी तस्वीर मस्तिष्क की स्लाइड पर अंकित हो जाती है। मस्तिष्क की स्लाइड की यह तस्वीर सालों तक बरकरार रहती है, जो फोटोग्राफ के साथ ही लेखनी में भी उतर आता है। कलाकार वेद प्रकाश भारद्वाज के लिए कला, जीवन को देखने, सोचने और समझने का एक साधन है, जो सामान्य प्रतीत होने वाली सतह से परे है। उनका कहना है कि रोज़मर्रा की स्थितियों में, बहुत कुछ अनदेखा रह जाता है, दिनचर्या के छाया में छिपा रहता है। एक कलाकार के रूप में, मैं इन अदृश्य परतों की तलाश करता हूँ, भावनाओं, यादों और कहानियों को आकार देता हूँ जो अक्सर अनकही रह जाती हैं।

मेरे अभ्यास में मिश्रित मीडिया में काम करना शामिल है, जिसमें कागज़ और कैनवास पर स्याही, कोलाज, ऐक्रेलिक और पानी के रंग का उपयोग किया जाता है। मैं अपने कामों को परतों के माध्यम से बनाता हूँ।

कई बार मैं इन अक्षरों को अमूर्त रूपों में बदल देता हूँ, पाठ और छवि के बीच, अर्थ और रहस्य के बीच की रेखा को धुंधला कर देता हूँ। इस प्रक्रिया के माध्यम से, मैं दर्शकों को अपने कृतियों को और अधिक गहराई से देखने के लिए आमंत्रित करता हूँ , अपनी खुद की छिपी कहानियों की खोज, कल्पना और चिंतन करने के लिए। इस अर्थ में कला न केवल दुनिया का प्रतिबिंब बन जाती है, बल्कि उन सभी के लिए एक भाषा भी बन जाती है। राजस्थान की धरती से आने वाले कलाकार विनय शर्मा अपने कलाकृतियों में भी राजस्थान को भी जीते हुए प्रतीत होते हैं, राजस्थानी रहन-सहन, परिवेश, संस्कृति इनके दिल से जुड़ी हुई जान पड़ती है जिसका प्रतिविंब इनके कृतियों में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। बुजुर्ग चेहरों पर पड़ी झुर्रियों के पीछे की पूरी संघर्ष गाथा, परंपरा को उजागर कर देना चाहते हैं कलाकार विनय शर्मा। सॉफ्ट पेस्टल के माध्यम से बहुत ही गहरे और भावनात्मक स्ट्रोक से खेलते हुए अनगिन कहानियों तक का सफर है इनके कृतियों में। ऋतस्य प्रदर्शनी में कलाकार सीमा तोमर अपने अलग विचार के साथ प्रस्तुत हुई हैं जहाँ मनुष्यों के उजागर होते दोहरे चरित्र को बाकायदा उकेरा गया है। इनकी कृतियाँ महिलाओं को समर्पित है। कलाकार सीमा तोमर कहती हैं कि मैंने महिलाओं के विभिन्न पहलुओं को जानने की कोशिश की है। उनका योगदान, आकांक्षाएँ, जीवन की विभिन्न भूमिकाओं के बीच संघर्ष, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक यात्रा मेरे काम के विषय हैं। अक्सर हमारे समाज में महिला को देवी के रूप में देखा खा जाता है, लेकिन वह व्यक्तिगत, सामाजिक और जीवन के अन्य क्षेत्रों में जो जीवन जीती है, वह बहुत अलग है।% उनके आकृतियों में काफी स्वतंत्रता है और फिर वो चाहे उसके बनावट या रंगों के उड़ान को लेकर ही क्यों ना हो।

हिमालय के गोंद में बसी निकोलस रोरिक आर्ट गैलरी, जहाँ कभी महान चित्रकार निकोलस रोरिक का निवास था, में 'ऋतस्य' नामक कला प्रदर्शनी का शुभारंभ 23 मई 2025 को हुआ, जिसका उद्घाटन

भारतीय क्यूरेटर सुरेश नड्डा जी तथा रूस की क्यूरेटर लरीसा वी सुर्गीना जी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। प्रदर्शनी में जयपुर के छात्र कलाकार आर्यन तिवारी सहित कई विशिष्ट लोगों की उपस्थिति रही। प्रदर्शनी 25 मई तक दर्शकों हेतु चलती रहेगी।

पुस्तक समीक्षा

सुभाष चंद्र अरोरा

समीक्षक

स्वरितः स्वरों की अनबुझी प्यास की दास्तां

आचार्य विद्यानिवास मिश्र ने महान कला मर्मज्ञ आनंद कुमार स्वामी के बारे में कहा था कि वे भारतीयता को सनातन प्रवाह के रूप में देखते थे और यह महसूस करते थे कि भारत में कोई चीज पुरानी नहीं होती, कोई चीज नई भी नहीं होती, भारत में वस्तु बार-बार पैदा होती रहती है, पुनः पुनः जायमान होती रहती है। ग्वालियर में गत 100 वर्षों से निरंतर आयोजित होने वाले तानसेन संगीत समारोह की शताब्दी वर्ष स्मारिका 'स्वरित' को पढ़कर सहज ही उनकी बातें अधिक प्रासंगिक प्रतीत होने लगती हैं।

'स्वरित' के संपादन में डॉ दिनेश पाठक ने पूरी संगीत निष्ठा से अतीत स्मृति प्रबंधन की खूबसूरत मिसाल पेश की है। जहां पहले लेख 'तानन प्रथम तानसेन' में उन्होंने उपलब्ध प्राचीन संदर्भों के आधार पर तन्ना ... तनसुख ... त्रिलोचन यानी संगीत सम्राट तानसेन की संपूर्ण जीवन गाथा का प्रामाणिक उल्लेख किया है। वहीं उनके व्यक्तित्व के दूसरे आयाम के संबंध में विनायक नारायण सप्रे के लेख 'वाग्गेयकार तानसेन' में बताया है कि संगीत रत्नाकर तथा राग तरंगिणी पुस्तकों में वाग्गेयकार के जो 28 गुण बताए हैं, वे सभी तानसेन के संगीत एवं काव्य में विद्यमान थे।संगीतज्ञ के अलावा एक उत्कृष्ट कवि के तौर पर तानसेन ने विभिन्न राग रागनियों में असंख्य पदों की रचना भी की।

स्मारिका में प्रख्यात साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 1907 में सरस्वती पत्रिका में लिखित दुर्लभ विश्लेषणात्मक लेख 'संगीत के स्वर' का पुनर्प्रकाशन भी किया गया है। एक अन्य लेख 'संगीत का मूलाधार एक है' में प्रख्यात सरोद वादक उस्ताद अमज़द अली खान भारतीय संगीत के सात स्वरों सा, रे, गा, मा, पा,धा, नी की तुलना पश्चिम के डो,री, मी, फा, ला, टी से करते हुए लिखते हैं कि संगीत पूरी दुनिया को एक सूत्र में पिरोता है। प्रो मुकुंद लाठ 'स्वर और शब्द' में लिखते हैं हमारा 'शास्त्रीय' राग संगीत भी अपने आप को गाने में ही पहले देखता है बजाने में बाद में। प्रो सुनीरा कासलीवाल व्यास अपने लेख 'तानसेन और हिंदुस्तानी संगीत' में राग दरबारी, मियां की मल्हार, मियां की तोड़ी, और मियां की सारंग की विस्तृत चर्चा के साथ तानसेन के वंशजों के संगीत के समर्पण का उल्लेख करते हुए लिखती हैं 'तानसेन के वंशजों की कठिन संगीत साधना, का ही यह परिणाम है कि तानसेन के देहावसान के लगभग 500 वर्ष पश्चात भी उनके विभिन्न राग और बंदिशें आज के विद्यार्थियों को उपलब्ध हैं।'

वरिष्ठ ध्रुपद गायक पंडित सुखदेव चतुर्वेदी ने ' ध्रुपद धमार गायन शैली के विकास में तानसेन के अभूतपूर्व योगदान' पर सारगर्भित प्रकाश डाला है। स्मारिका में वरिष्ठ पत्रकार और सम्पादक चंद्रवेश पांडे द्वारा तानसेन अलंकरण से विभूषित प्रख्यात

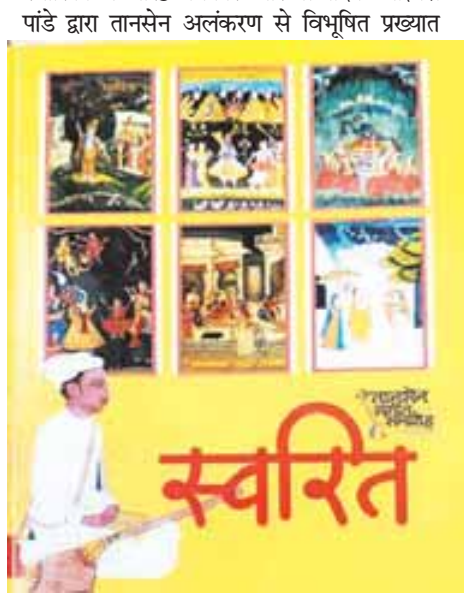

तबला नवाज पंडित स्वप्न चौधरी से की गई लंबी बातचीत भी शामिल है।इसमें पंडित स्वप्न चौधरी बाबा तानसेन के नाम से मिले सम्मान को ईश्वर के प्रसाद तुल्य निरूपित करते हैं। पंडित शंकर नारायण राव पंडित का लेख 'महाराजा मानसिंह तोमर का भारतीय संगीत में योगदान' जहां ध्रुपद गायन शैली में राजा मानसिंह तोमर के बृहद योगदान का ज़िक्र करता है वहीं उनके द्वारा रचित संगीत ग्रन्थ ' मान कौतूहल ' के दस अध्यायों का विश्लेषण प्रो. रंजना टोणपे द्वारा अपने लेख में किया गया है। प्रख्यात कला समीक्षक एवं संपादक प्रयाग शुक्ल का लेख 'कलाओं में ऋतु प्रसंग' के साथ ही डॉ. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय के सौजन्य से आवरण पृष्ठ और स्मारिका के भीतर भी लघु चित्र शैली की रागमाला पेंटिंग का अपना ही विशिष्ट आकर्षण है। उनका लेख '%लघु चित्रों में राग माला के अंकन' स्वरों को रंग और रेखाओं की रहस्य भरी दुनिया में सजीव होने की प्रक्रिया को समझाता है।

'उन्हें याद सब है ज़रा ज़रा... 'में प्रख्यात बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया उन दिनों की याद करते हैं जब ग्वालियर वायु मार्ग से नहीं जुड़ा था और संगीतज्ञ रेलगाड़ी से किसी तरह ग्वालियर पहुंचते थे बावजूद परेशानियों के प्रस्तुति देने के आनंद की अनुभूति अविस्मरणीय है। 101 वर्षीय पं मार्तंडराव नानू जोशी, 93 वर्षीय भरत लाल शर्मा, 91 वर्षीय पं. लक्ष्मण कृष्णराव पंडित और 90 वर्षीय प्रो प्रभाकर गोहदकर के तानसेन समारोह संबंधी संस्मरण तथा अन्य श्रोताओं के अनुभव भी गुजरे जमाने की यादों को ताजा कर देते हैं। 'उनने कहा था ...' वर्ग में पं रविशंकर और पं कृष्णराव शंकर पंडित जैसे प्रख्यात संगीतकारों की स्मृतियां, खासकर भारत रत्न लता मंगेशकर का संगीत पुरुष तानसेन को अद्भुत करार देना और ताउम्र उच्च कोटि के स्वरों की प्रतीक्षा करते रहने का जज्बा हमें संगीत की उस ऊंचाई से परिचित कराता है जहां कुछ अद्भुत होने की संभावनाएं सदा बनी रहती हैं।

ग्वालियर में भी स्वरों के प्रति ऐसी ही प्यास है जो सदियों से आज तक अनबुझी है और सदैव तानसेन का स्मरण करती है।यूनेस्को द्वारा संगीत नगरी घोषित ग्वालियर दुनिया में एकमात्र ऐसा स्थल है जहां एक सदी से निरंतर संगीत पुरुष तानसेन की स्मृति में यह श्रद्धा पर्व (संगीत यज्ञ) निरंतरता पूर्ण जारी है। दुनिया भर के संगीत प्रेमी इस अवसर का लाभ लेने तानसेन समारोह में हाजिरी लगाते हैं। यह स्मारिका संगीत प्रेमियों,रसिकों, विद्यार्थियों और सुधि पाठकों के लिए ज्ञान का भंडार है। साथ ही शोध छात्रों के लिए संदर्भ ग्रंथ भी।इस हेतु स्मारिका के सम्पादक के साथ साथ प्रकाशन से संबंधित पूरी टीम साधुवाद की पात्र है।

पुस्तक -स्वरित (तानसेन समारोह शताब्दी वर्ष स्मारिका)
संपादक - डॉ दिनेश पाठक
प्रकाशक - उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद (भोपाल)

युद्ध की स्थितियों के बीच एक संदेश देती हॉलीवुड फिल्म

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

यूक्रेन और रुस के बीच घोषित युद्ध जारी है ठीक वैसी ही स्थिति इजरायल और हमास के बीच भी है। कई और देश भी गृहयुद्ध की विभीषिका को झेल रहे हैं । हाल ही में पाकिस्तान द्वारा उत्प्रेरित एक आतंकी हमले के बाद भारत को भी पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को नष्ट करने के लिये - 'आपरेशन सिन्दूर' जैसी सामरिक कार्रवाई करनी पड़ी। युद्ध की इन स्थितियों के बीच ही इस माह सत्रह मई को एक सकारात्मक संदेश देती हुई फिल्म -'मिशन इंपॉसिबल- द फायनल रेकनिंग ' प्रदर्शित हुई।इस बार हम हॉलीवुड फिल्मों के शीर्षस्थ कलाकार टाम क्रूज की इसी एक फिल्म की चर्चा करेंगे ।

सरहदों पर जब सेनाएं लड़ती हैं, तो उनको इस बिन्दू तक लाने के कई कारक होते हैं। क्या ऐसा कोई कारक कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) भी तैयार कर सकती हैं? आईएमएफ के जासूस एथन हंट की भूमिका में टाम क्रूज इसी सवाल का जवाब इस फिल्म में ढूँढते हैं । इसी सवाल का जवाब इस फिल्म में खोजते हुए विदा हो रहा है । वर्ष 1996 से अपने दमदार अभिनय से अपने प्रशंसकों को अभिभूत करने वाले टाम क्रूज ने अपनी इस नई फिल्म 'मिशन इंपॉसिबल- द फायनल रेकनिंग ' में भी दमदार अभिनय से एक नये शिखर को छूते हुए अपने अभिनय से इस फिल्म को देखने योग्य बनाया है ।

हम परछाई में जीते और मरते हैं, उनके लिए जो हमारे करीब हैं और जो हमसे कभी नहीं मिले। करीब तीन दशक पहले अपनी इम्पॉसिबल मिशन फोर्स के जरिए दुनिया को बचाने की मुहिम शुरू करने वाले ईथन हंट और उनकी टीम का कुछ यही जीवन दर्शन है, जिसके चलते वे दुनिया को बचाने के लिए बार- बार अपनी जान दांव पर लगाते हैं। हालांकि फिल्म के निर्माताओं का कहना है कि अपनी आठवीं किस्त के साथ करीब तीन दशक पुरानी यह सुपरहिट फ्रेंचाइजी मिशन इम्पॉसिबल अपने आखिरी पड़ाव पर पहुँच चुकी है मगर यदि यह किस्त सफल रही तो हो सकता है इस फ्रैंचाइजी को विस्तार मिल जाये ।

यह फिल्म वहीं से शुरू होती है, जहाँ पर करीब दो साल पहले रिलीज हुआ इसका पहला भाग खत्म हुआ था। ईथन हंट (टॉम क्रूज) को वह खुफिया चाबी मिल चुकी है, जिसकी उसे लम्बे अरसे से तलाश थी। लेकिन अभी तक वह इससे अनजान है कि इसके पीछे कौन सा रहस्य छिपा है । इसी दौरान एक दिन उसे यूएस प्रेसीडेंट का मैसेज मिलता है, जो उसे दुनिया भर के लिए खतरा बन चुके आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस के 'वजूद' से बचाने के मिशन पर जाने के लिए कहती हैं। ईथन को पता लगता है कि उसके पास जो चाबी है, वह आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस- ' वजूद ' के इस दुनिया में आने के रहस्य से जुड़ी है। फिर वह अपनी टीम के साथ समन्दर की गहराइयों में डूबी उस रशियन सबमरीन को तलाशने की मुहिम में जुट जाता है, जिसमें ' वजूद ' पर काबू पाने का रास्ता मिल सकता है । ईथन इस कथित मिशन इंपासिबल को मिशन पासिबल में कैसे बदल पाता है यही फिल्म की स्टोरी लाईन है ।

फिल्म के निर्देशक मैकक्वैरी ने इस कहानी को समूची भव्यता से प्रस्तुत किया है । यह फिल्म एआई और न्यूक्लियर पावर के दौर में दर्शकों को इनकी चुनौतियों और खतरों से रूबरू कराती है। फिल्म की शुरुआत पिछली फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाते हुए होती है, लेकिन इण्टरवल से पहले इसकी भूमिका बनाने में काफी वक्त बीत जाता है। इसके चलते कई बार दर्शकों का ध्यान भटकता है। हालांकि इण्टरवल के बाद कहानी फिर से ट्रैक पर आ जाती है और क्लाईमैक्स तक बेहद तेजी से रोमांचक अन्दाज़ में आगे बढ़ती है। हालांकि निर्माताओं ने इसे फ्रेंचाइजी की आखिरी फिल्म बताया है, लेकिन फिल्म के आखिर में इसके सीक्वल की गुँजाइश छोड़ी गई है।

फिल्म में अभिनय का जहाँ तक सवाल है टॉम क्रूज हमेशा की तरह स्क्रीन पर बेहद शानदार लगे हैं। उन्हें देखकर यकीन नहीं होता कि उम्र के छह दशक पूरा कर चुका शख्स इतना सुन्दर इतना प्रभावी हो सकता है और फिल्म के तमाम एक्शन सीन्स भी उन्होंने बड़ी शिद्दत के साथ अभिनित किये हैं विशेष रुप से समन्दर के अन्दर फिल्माए गए दृश्य तो लाजवाब हैं। गहरे समन्दर में टॉम क्रूज का अन्दाज़ आपको हैरान कर देगा। वहीं फिल्म के दूसरे कलाकारों हेली एटवेल, विंग रैम्स, सिमोन पेग और एंजेला बैसेट ने भी बढ़िया काम किया है। फिल्म की सिनेमेटोग्राफी भी। लाजवाब है। वहीं फिल्म का बैकग्राउंड म्यूजिक भी अच्छा है ।

आप टॉम क्रूज और 'मिशन इम्पॉसिबल' सिरीज़ के फैन हैं तो अपने पसन्दीदा हीरो को इस सिरीज़ की कथित तौर पर आखिरी फिल्म में देखने सिनेमाघर में जरूर जाना चाहिये और बेहतर होगा कि इसके पहले भाग को एक बार फिर से देख लें, ताकि आप फिल्म का पूरी तरह आनन्द उठा पायें ।

परवरिश और भविष्य का निर्माण

विचार

विपिन तिवारी

लेखक पत्रकार हैं।

परवरिश एक ऐसा बीज है, जो बच्चे के भविष्य को आकार देता है। माता-पिता का दायित्व है कि वे बच्चों में संस्कार, अनुशासन और नैतिकता का बीज बोएं। यदि बड़े होकर बच्चे माता-पिता की बात नहीं मानते, तो इसका दोष केवल बच्चों पर मढ़ना उचित नहीं। परवरिश की नींव ही उनके व्यवहार को निर्धारित करती है। बच्चों का मन कोरा कागज होता है, जिस पर माता-पिता अपने संस्कारों और शिक्षाओं से लेख लिखते हैं। यदि परवरिश में प्रेम, संवाद और अनुशासन का संतुलन नहीं रहा, तो बच्चे स्वच्छंद या विद्रोही हो सकते हैं। अत्यधिक लाड़-प्यार या उपेक्षा बच्चों में जिद या असम्मान की भावना पैदा कर सकती है। कठोरता या अत्यधिक लाड़-प्यार, दोनों ही हानिकारक हैं। संतुलित परवरिश, जहां प्यार के साथ अनुशासन हो, बच्चों को जिम्मेदार बनाती है। उदाहरण के लिए, यदि माता-पिता बच्चों को गलतियों से सीखने का अवसर दें और उन्हें सही-गलत का अंतर समझाएं, तो बच्चे स्वयं सही मार्ग चुनते हैं। अंततः, परवरिश एक कला है, जो धैर्य और समझदारी मांगती है। बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए माता-पिता को स्वयं एक आदर्श प्रस्तुत करना होगा। गलत परवरिश के परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं, इसलिए इसे सजगता से निभाना आवश्यक है। यदि बच्चे बड़े होकर आपकी बात नहीं मानते, अवज्ञा करते हैं, तो यह परवरिश की कमियों का परिणाम हो सकता है। इसलिए, माता-पिता को आत्म-चिंतन करना चाहिए और परवरिश में संतुलन, धैर्य व आदर्श व्यवहार को अपनाना चाहिए, ताकि बच्चे सम्मान और जिम्मेदारी का मूल्य समझें।

26 को मनाएंगे भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप, मोक्ष कल्याणक महोत्सव

दो मुनि भगवंतों सहित गुरु मां का मिलेगा सान्निध्य

धार। दिगंबर जैन समाज धार स्थित शांतिनाथ जैन मंदिर में 26 मई को शांतिनाथ भगवान का जन्म, तप व मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। इस महोत्सव में दो मुनिश्री विभासस्वर मुनिजी मसा, शुद्धोपयोग जी मसा एवं मानतुंगगिरी तीर्थ पर विराजित गुरु मां चंद्रमति माताजी अपना सान्निध्य प्रदान करेंगे। मीडिया प्रभारी सुभाष जैन ने बताया कि महोत्सव में शांतिनाथ विधान मंडल पूजन, तथा निर्वाण लाडू भी चढ़ाए जाएंगे। यह कार्यक्रम पंडित श्री भरत शास्त्री इंदौर के निर्देशन एवं पंडित विमल शास्त्री धार के मार्गदर्शन में होगा। कार्यक्रम में संगीत अनुभव जैन प्रदान करेंगे। दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल व सचिव संजय छाबड़ा ने बताया कि कि मुनि श्री संघ का आगमन 23 मई को धार में हो गया है। समाज के सभी पदाधिकारी, महिला मंडल, दिगंबर जैन महा समिति महिला मंडल तथा मुनि आहार समिति ने समाजजनों से उक्त कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है। मंडल विधान के लाभार्थी नरेश कुमार श्रेणिक कुमार गंगवाल रहेंगे।

लव जिहाद जैसे गम्भीर विषय पर संस्था ज़न चेतना का आयोजन 28 को

देवास/मोहन वर्मा । शहर की सामाजिक संस्था जन चेतना द्वारा आगामी 28 मई वीर सावरकर जयन्ती पर लव जिहाद जैसे गम्भीर विषय पर एक अभिनव आयोजन किया जा रहा है । हिन्दू बालिकाओं और महिलाओं की जागरुकता के लिए होने वाले इस कार्यक्रम में उज्जैन,भोपाल और गुजरात से प्रखर वक्ता आमंत्रित किए हैं । इस सम्बंध में आज एक पत्रकार वार्ता आयोजित कर जानकारी साझा की गई ।

संस्था प्रमुख पार्षद अजय तोमर ने बताया कि समाज में बढ़ती लव जिहाद जैसी घटनाओं को देखते हुए समाज में जागरुकता जरूरी है और इसीलिए संस्था द्वारा वीर सावरकर जयन्ती 28 मई को यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है । होटल रामाश्रय परिसर में होने वाले इस कार्यक्रम में गुजरात से श्रीमती काजल हिंदुस्तानी,भोपाल से डॉ प्रदीप त्रिपाठी और उज्जैन से श्रीमती राजश्री जोशी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे ।

संस्था की मातृ शक्ति ने प्रेस वार्ता में जानकारी साझा की । पार्षद रितु सावनेर ने संस्था परिचय देते हुए अबतक की गतिविधियों की जानकारी दी । श्रेया चौबे ने बताया कि डॉ प्रदीप त्रिपाठी भोपाल वीर सावरकर जी के जीवन और उनके सामाजिक योगदान के बारे में बताएंगे वहीं श्रीमती राजश्री जोशी उज्जैन लोक माता अहिल्याबाई की 300 वी जन्म शताब्दी वर्ष पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करेंगी । श्रीमती मिथिलेश सोनी ने लव जिहाद के विरुद्ध इस कार्यक्रम की जरूरत क्यों विषय पर अपनी बात रखते हुए उपस्थित मीडिया से इसे बहु प्रचारित करने का अनुरोध किया जिससे अधिक से अधिक बालिकाएं और महिलाएं इसका लाभ ले सकें। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता गुजरात की श्रीमती काजल हिन्दुस्तानी होगी । इस अवसर पर पार्षद उषा खत्री,अल्पना तोमर,श्रेया डोगरा ने भी सभी से कार्यक्रम में उपस्थित रहने की अपील की है ।

बैतूल शहरवासियों को जल संकट से मिलेगी निजात

पुराने ट्यूबवेलों से भी होगी पेयजल सप्लाई, विधायक ने बैठक लेकर दिए निर्देश

बैतूल। ग्रीष्मकाल में शहर में पेयजल संकट की संभावना को गंभीरता से लेते हुए बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने शनिवार को अपने निवास पर नपाध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर, सीएमओ सतीश मटसेनिया, सहायक यंत्री नीरज धुर्वे सहित जलप्रदाय शाखा के अमले की बैठक लेकर पेयजल सप्लाई व्यवस्था की गहन समीक्षा की। यहां उल्लेखनीय है कि 24 मई के अंक में दैनिक सुबह सवेरे में 'बैतूल शहर में पेयजल संकट' को लेकर लीड खबर का प्रकाशन प्रमुखता से किया गया था, जिसके बाद आज 25 मई को विधायक ने इसे गंभीरता से लेते हुए तुरंत नपाध्यक्ष, सीएमओ एवं जलप्रदाय शाखा के अमले की बैठक ली। जिसमें विधायक ने नपा के अधिकारियों को निर्देश दिए कि नगरवासियों को पर्याप्त पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ताप्ती बैराज के साथ ही पुराने ट्यूबवेलों से भी अस्थाई रूप से पेयजल सप्लाई शुरू की जाए। बैठक में सीएमओ श्री मटसेनिया ने बताया कि 335 एचपी की मोटर जल्दी ही भोपाल से ठीक होकर आ जाएगी, जिससे ताप्ती बैराज से व्यवस्थित पेयजल सप्लाई होने लगेगी। बैठक में विधायक ने निर्देश दिए कि माचना में पानी खत्म होने के बाद पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए पूर्व से जिन ट्यूबवेलों का उपयोग नहीं हो रहा था, उन ट्यूबवेलों से भी अस्थाई रूप से पानी की सप्लाई की जाए। नपाध्यक्ष श्रीमती बारस्कर ने शहरवासियों से अपील की कि सभी नपा प्रशासन का सहयोग करें। आगामी दो दिनों में पेयजल सप्लाई सुचारू रूप से संचालित होने लगेगी। बैठक में जलप्रदाय शाखा के प्रभारी उपयंत्री जतिन पाल, उपयंत्री अमित सक्सेना एवं सुपरवाइजर पंकज सोनी भी मौजूद रहे।

4 करोड़ से होगा ताप्ती बैराज का सुधार कार्य-पेयजल की समीक्षा बैठक में नपा सीएमओ ने विधायक को अवगत कराया कि क्षतिग्रस्त ताप्ती बैराज के सुधार कार्य के लिए जल संसाधन विभाग द्वारा 4 करोड़ रुपए की डीपीआर बनाई जा रही है जिसके बाद इसके टेंडर लगाए जाएंगे। ताप्ती बैराज में सुधार कार्य होने से बैराज की जल भराव क्षमता में बढ़ोतरी होगी, जिससे भविष्य में बैतूल नगरवासियों को भरपूर पानी मिल सकेगा।

जिला अस्पताल में वार्ड बॉय की कमी, परिजन धकेल रहे स्ट्रेचर

24 वार्ड बॉय के स्थान पर मौजूद है सिर्फ 7 से 8 मौजूद

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिला अस्पताल में गंभीर हालत में इलाज कराने आने वाले मरीजों और वार्ड में भर्ती मरीजों को वार्ड तक या जांच के लिए ले जाने के लिए स्ट्रेचर की आवश्यकता होती है। इसके लिए अस्पताल में खोजने पर स्ट्रेचर तो उपलब्ध हो जाते है, लेकिन वार्डबॉय नहीं मिलते। ऐसे में मरीज के परिजन खुद ही स्ट्रेचर खींचकर मरीज को वार्ड या जांच केंद्र तक ले जाते हैं। दरअसल जिला अस्पताल में वार्डबॉय की कमी बनी हुई है। यहां 20 से 24 वार्डवॉय की आवश्यकता है, जिसके एवज में फिलहाल 8 ही वार्डवॉय मौजूद है। हालांकि अस्पताल प्रबंधन ने वार्डबॉय की कमी से शासन को कई बार अवगत भी कराया, किन्तु नई भर्ती नहीं होने और नियमित वार्डवॉय के लगातार सेवानिवृत्त होने के चलते वार्डबॉय की कमी हो गई। बता दे कि करोडों की लागत से बने 300 बिस्तरीय जिला अस्पताल में लगभग 20 से 24 वार्डबॉय होने चाहिए, लेकिन जिला अस्पताल में लगभग 8 ही वार्ड बॉय मौजूद है। इतने कम वार्ड बॉय होने के कारण आए दिनों अस्पताल की व्यवस्था बिगड़ जाती है। देखने में आता है कि जब मरीज उपचार के लिए जिला

अस्पताल पहुंचते है तो अधिकतर मरीजों के साथ परिजन स्ट्रेचर खींचते हुए दिखाई पड़ते है। वार्ड बॉय मौजूद तो है, लेकिन दूसरे कामों में लगे रहते है। जिला अस्पताल में वार्ड बॉयों की संख्या बढ़ती है, तो व्यवस्था में सुधार लाया जा सकता है।

तीन मंजिला है जिला अस्पताल भवन - तीन मंजिला जिला अस्पताल में देखने में आता है कि मरीज ग्राउंड फ्लोर से तीसरी मंजिल तक परिजन लेकर जाते है। थोड़ी राहत की बात यह है कि जिला चिकित्सालय में लिफ्ट है। लेकिन मरीज को सिटी स्टेन, एक्स-रे इत्यादि जांच कराने स्ट्रेचर पर मरीजों के परिजन लेकर जाते है। हाल ही में कुछ महीनों पहले नये नियम लागू किए, जिसमें मरीज के साथ जिला अस्पताल में केवल एक ही परिजन रह सकते है। स्ट्रेचर खींचते हुए मरीज को ले-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, उस समय परेशानी और बढ़ जाती है जिस टाइम मरीज के साथ महिला अटेंडर रहती है। मरीज को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। वार्ड बॉय किसी दूसरे मरीज को वार्ड लेकर जाते है तो मुख्य गेट के पास वार्ड बॉय नहीं रह पाते, जिससे मरीज और परिजनों को परेशान होना पड़ता है।

गंभीर मरीजों को रिसीव करने में हो जाती है देरी- वार्ड बॉय की कमी के कारण कई बार गंभीर मरीजों को रिसीव करने में देरी हो जाती है, जब एम्बुलेंस मरीज को जिला अस्पताल लेकर आती है तो उस समय वार्ड बॉय मौजूद नहीं होते। मरीजों के परिजनों का कहना है कि अस्पताल में पर्याप्त वार्ड बॉय रहने पर बेहतर व्यवस्था बनाई जा सकती है। कर्मचारियों की कमी के कारण अस्पताल प्रशासन भी व्यवस्था नहीं बना पा रहा है। यहीं वजह है कि जिले के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल में मरीजों की परेशानियां कम होने का नाम हीं नहीं ले रही है। यहां संसाधनों की कमी के कारण आए दिनों मरीज और उनके परिजनों को असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

जिला अस्पताल में खाली पड़े है वार्डवॉय के कई पद

जिला अस्पताल में वार्ड बॉय के कई पद खाली है, लेकिन भर्ती नहीं हो पाई है। फंड की कमी के कारण आउट सोर्स से वार्ड बॉय की नियुक्ति नहीं हो पाती है। एक जानकारी के अनुसार तीनों शिफ्ट में करीब 20 से 24 वार्डबॉय की आवश्यकता होती है, लेकिन अस्पताल में सिर्फ 7 से 8 वार्डवॉय ही मौजूद है। ऐसे में मरीज के परिजनों का कहना है कि स्ट्रेचर में रखकर मरीज को ले जाना, आसान नहीं है लेकिन वह किसी तरह एक-दूसरे की सहायता लेकर अपने मरीजों का इलाज कराते हैं। जबकि अस्पताल प्रबंधन यह सब देखते हुए भी मूक दर्शक बना रहता है। अस्पताल के वार्डबॉय कहां रहते हैं, क्या करते हैं यह तो अस्पताल प्रबंधन को भी पता नहीं रहता। अस्पताल में परेशान होते परिजन अपने मरीजों को स्ट्रेचर पर लाते, ले जाते देखे जा सकते हैं।

इनका कहना है -

जिला अस्पताल में वैसे 20 से 24 वार्ड बॉय की आवश्यकता है, लेकिन वर्तमान में केवल 7-8 ही वार्डबॉय मौजूद है। नई भर्ती नहीं होने और नियमित कर्मचारियों के लगातार सेवानिवृत्त होने के कारण कमी होते जा रही है। वार्ड बॉय की नियुक्ति के संबंध में शासन से पत्राचार कर वार्डबॉय और अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति की मांग की जा रही है।

- डॉ. जगदीश घोरे,
सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़ा का शुभारंभ

देवास /इंदौर । 05 जून को प्रति वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष इस अवसर पर 22 मई, 2025 से 05 जून, 2025 तक रेल्वे द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है । इस अवसर पर मंडल कार्यालय रतलाम में मंडल रेल प्रबंधक श्री अश्वनी कुमार सहित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण प्रतिज्ञा को पढ़कर हस्ताक्षर किया गया। मंडल कार्यालय परिसर में पर्यावरण संरक्षण प्रतिज्ञा का पाठ करने के साथ ही सेल्फी पाईंट भी बनाया गया था। इस अवसर पर रतलाम मंडल के प्रमुख स्टेशनों जैसे रतलाम, उज्जैन, इंदौर, चित्तौड़गढ़, डॉ. अम्बेडकर नगर, नीमच, नागदा, लोको केयर सेंटर रतलाम सहित अन्य कार्यशालाओं, रेलवे चिकित्सालयों, चिकित्सा यूनिटों में भी विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़ा के शुभारंभ

के अवसर पर रैली, जागरुकता अभियान का आयोजन किया गया। मंडल कार्यालय रतलाम सहित मंडल केअन्य स्टेशनों पर भी सेल्फी पाईंट लगाये गये हैं। इस 15 दिवसीय पखवाड़ा में प्रति दिन अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरुक किया जाएगा।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल आज धार में सिकल सेल जागरूकता कार्यक्रम में होंगे शामिल

केंद्रीय राज्यमंत्री सवित्री ठाकुर ने तैयारियों का जायजा लिया

धार। रविवार 25 मई को धार में आयोजित होने जा रहे सिकल सेल जागरूकता कार्यक्रम 'संकल्प प्रयास से आशा- एक कदम जागरूकता की ओर' में शामिल होने मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल धार आ रहे है। कार्यक्रम की तैयारियों का शनिवार को केंद्रीय राज्य मंत्री सवित्री ठाकुर ने पीजी कॉलेज ऑडिटोरियम पहुँचकर निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह भी उनके साथ मौजूद रहे। अधिकारियों ने व्यवस्थाओं की विस्तार से समीक्षा की और कार्यक्रम की सुचारुता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए।

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल 25 मई को भाग लेंगे।

वे प्रातः 9-30 बजे हेलीकॉप्टर द्वारा भोपाल से धार पहुंचेंगे तथा पीजी कॉलेज ऑडिटोरियम में सुबह 10 से 11-30 बजे तक आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता करेंगे। कार्यक्रम उपरांत वे 11-30 बजे सर्किट हाउस के लिए रवाना होंगे और दोपहर 12-40 बजे हेलीकाप्टर से बड़वानी जिले के लिए प्रस्थान करेंगे।

जिलेवासियों को मिले टोल टैक्स पर छूट या फ्री पास

पूर्व मंत्री पांसे ने लिखा वरिष्ठ अधिकारियों को पत्र

बैतूल/मुलताई। अधूरे फोरलेन निर्माण, कुंडी प्लाजा पर टैक्स वसूली बंद किए जाने, अधूरे फोरलेन निर्माण कार्य के एलाइनमेंट और गुणवत्ता की जांच किए जाने एवं अन्य समस्याओं को लेकर पूर्व मंत्री एवं मप्र. कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष सुखदेव पांसे द्वारा शनिवार 24 मई को जिला कलेक्टर बैतूल एवं पुलिस अधीक्षक बैतूल को पत्र लिखा गया है। पत्र में बताया गया है कि बैतूल से औबेदुल्लागंज फोरलेन पर शाहपुर के पास कुंडी में टोल प्लाजा दिनांक 21 मई 2025 दिन बुधवार से प्रारंभ किया गया है, जो एन.एच.ए.आई. के नियमों के विपरीत है। उक्त फोरलेन पर बरेठा घाट, भौंरा एवं इटारसी के पास का निर्माण कार्य वर्तमान में अधूरा पड़ा हुआ है। यह फोरलेन का कार्य पूर्ण नहीं हुआ है, तो यह कैसे एन.एच.ए.आई. को हैंडओवर हो सकता है? और जब हैंडओवर ही नहीं हो सकता है, तो किस आधार पर टोल टैक्स की वसूली शुरू की जा रही है, जो कि एन.एच.ए.आई. के नियमों के विरुद्ध है। उक्त फोरलेन वर्तमान तक जितना भी निर्मित हुआ है, वह उबड़-खाबड़ है, जो फोरलेन के नियमों के अनुरूप नहीं है। इसके एलाइनमेंट और गुणवत्ता की एक्सपर्ट एजेंसी से जांच कराना अति आवश्यक है। बैतूल जिले में अन्य जिलों की भांति सबसे ज़्यादा टोल प्लाजा होने से बैतूल जिले की गरीब जनता का मनमाना दोहन हो रहा है। बैतूल जिले में खम्बारा, मिलानपुर, कोथलकुंड, गढ़ा, घोड़ाडोंगरी इत्यादि आधा दर्जन टोल प्लाजा यह साबित करते हैं। इस स्थिति में टोल प्लाजा पर स्थानीय लोगों को टोल टैक्स पर छूट या फ्री पास दिया जाना चाहिए, चाहे उनका वाहन किसी भी राज्य या जिले में पंजीकृत हो। श्री पांसे ने मांग की है कि बैतूल से औबेदुल्लागंज फोरलेन पर शाहपुर के पास अधूरे फोरलेन पर कुंडी में शुरू किए गए टोल प्लाजा को शीघ्र बंद कर, उक्त अधूरे निर्मित फोरलेन के एलाइनमेंट, गुणवत्ता की एक्सपर्ट एजेंसी से जांच कराई जाए, साथ ही बैतूल जिले के स्थानीय लोगों को टोल टैक्स पर छूट या फ्री पास प्रदान किया जाए।

नगर वन प्रस्तावों को मिली त्वरित स्वीकृति, ताप्ती कंजर्वेशन रिजर्व को केंद्र से मिलेगी अतिरिक्त राशि

केन्द्रीय वन मंत्री यादव से केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके ने की भेंट

बैतूल। केन्द्रीय जनजातीय कार्य राज्यमंत्री दुर्गादास उइके ने हाल ही में केन्द्रीय वन मंत्री भूपेंद्र यादव से मुलाकात कर अपने संसदीय क्षेत्र बैतूल की विभिन्न पर्यावरणीय एवं जनजातीय विकास से जुड़ी योजनाओं पर चर्चा की। इस दौरान नगर वन प्रस्तावों एवं ताप्ती कंजर्वेशन रिजर्व सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर तत्काल निर्णय लिए गए। श्री उइके ने बताया कि बैतूल एक आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है, जो अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। क्षेत्र की विशेष सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए इसके समुचित विकास के लिए विशेष प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने मुलताई, चिचोली और बैतूल में नगर वन की स्थापना से जुड़े लंबित प्रस्तावों की शीघ्र स्वीकृति की मांग की। जिस पर वन मंत्री श्री यादव ने इन प्रस्तावों को त्वरित मंजूरी प्रदान कर दी है। इसके अलावा ताप्ती कंजर्वेशन रिजर्व के लिए केंद्र सरकार से अतिरिक्त निधि उपलब्ध कराने का अनुरोध भी किया गया, जिस पर सहमति जताते हुए श्री यादव ने परियोजना को पूर्ण समर्थन देने का

आश्वासन दिया। श्री उइके ने आदिवासी समुदाय के लिए कौशल विकास केंद्रों की स्थापना और वनग्रामों को मॉडल गांव के रूप में विकसित करने की भी मांग रखी। उन्होंने वन विभाग को नोडल एजेंसी नियुक्त कर इन ग्रामों के विकास को गति देने का सुझाव दिया। वन मंत्री श्री यादव ने इन सभी विषयों पर शीघ्र कार्रवाई का भरोसा दिलाया। इस मुलाकात से बैतूल क्षेत्र में विकास के नए द्वार खुलने की उम्मीद जताई जा रही है।

कोतवाली थाना पुलिस ने किया दो चोरी का खुलासा, एक गिरफ्तार, तीन फरार

2 लाख 50 हजार रुपये के सोने-चांदी के जेवरात जब्त

बैतूल। कोतवाली थाना पुलिस ने चोरी की दो घटनाओं का खुलासा करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है, वहीं तीन फरार आरोपियों की तलाश कर रही है। पुलिस ने चोरी के ढाई लाख के सोने-चांदी के जेवरात भी बरामद किये है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 20 नवंबर 2024 को विजय कामथकर निवासी पीडब्ल्यूडी कॉलोनी भगत सिंह वार्ड बैतूल द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि उनके शासकीय क्वार्टर में अज्ञात व्यक्ति द्वारा दिनदहाड़े प्रवेश कर अलमारी से सोने-चांदी के जेवरात चोरी कर लिए गए हैं। शिकायत पर थाना कोतवाली में धारा 305 बीएनएस के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। वहीं 13 फरवरी 2025 को घनश्याम झाड़े निवासी महावीर वार्ड, सदर बैतूल द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि 12 फरवरी 2025 को उनकी पुत्री का विवाह कार्यक्रम कस्तूरी बाग मैरिज लॉन इटारसी रोड बैतूल में आयोजित था, जहां स्टेज पर रखे एक बैग से अज्ञात आरोपी द्वारा सोने-चांदी के जेवर चोरी कर लिए गए। इस मामले में पुलिस ने धारा 305 बीएनएस के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। चोरी की दोनों ही घटनाओं और अज्ञात आरोपी की तलाश के लिए विशेष टीम का गठन किया गया। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर सीन

ऑफ क्राइम एक्सपर्ट निरीक्षक आबिद अंसारी द्वारा घटनास्थलों का सूक्ष्म निरीक्षण कर महत्वपूर्ण भौतिक साक्ष्य संकलित किए गए। तकनीकी विश्लेषण एवं विवेचना के आधार पर ज्ञात हुआ कि उक्त घटनाएं आरोपी अंकित उर्फ भूत पिता राजू डेहरिया, निवासी चांदामेटा परासिया, जिला छिंदवाड़ा द्वारा की गई हैं। 23 मई 2025 को उक्त आरोपी को गिरफ्तार कर दोनों मामलों से संबंधित कुल 2,50,000 रुपये मूल्य के सोने-चांदी के जेवरात जब्त किए गए हैं। आरोपी को न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। आरोपी के अन्य तीन साथियों की तलाश जारी है।

पुलिस ने चोरी के यह आभूषण किये बरामद- पुलिस ने चोरी गए 1 सोने का हार (पेंडल सहित), 18 नग सोने के मोती, 02 नग सोने के मंगलसूत्र पेंडल, 22 नग छोटे-बड़े मनी मोती, 02 नग सोने की बालियां, 01 नग सोने की नथ (नाक की लौंग), 02 जोड़ी चांदी की पायल, 01 चांदी का करधन (कमरबंद), 03 चांदी की अंगूठियां, आभूषणों की कुल अनुमानित कीमत दो लाख पचास हजार रुपये रुपये है। इस कार्यवाही में निरीक्षक रविकांत डेहरिया, थाना प्रभारी कोतवाली, निरीक्षक आबिद अंसारी, फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट, उप निरीक्षक जगदीश प्रसाद ठाकुर, उप निरीक्षक नरेन्द्र ठाकुर, सहायक उप निरीक्षक अरुण यादव, प्रधान आरक्षक शुभम चौबे, प्रधान आरक्षक ब्रजेश रघुवंशी, आरक्षक नितिन चौहान, आरक्षक प्रदीप कहार, आरक्षक हर्षित डांगे, आरक्षक राहुल शर्मा की सराहनीय भूमिका रही।

चोरों ने दिनदहाड़े बनाया मकान को निशाना

सोने-चांदी के जेवर पर किया हाथ साफ, सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए चोर

मुलताई। मुलताई नगर में चोरियों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है बल्कि अब चोरों के हौसले इतने बुलंद है कि वह दिन दहाड़े भी चोरी की घटना को अंजाम देने लगे हैं । हाल ही में ताप्ती वार्ड के संतरा मंडी क्षेत्र में स्थित एक मकान में चोरी की घटना को अंजाम दिया और मकान में रखें लाखों रुपए के सोने चांदी के जेवर और नकदी लेकर चंपत हो गए। दोनों चोर चोरी की घटना को अंजाम देने के बाद सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं। घटना के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार ताप्ती वार्ड निवासी योगराज हजारे अपने परिवार के साथ निकटतम ग्राम करपा गए हुए थे और घर में कोई नहीं था। इसका फायदा उठाकर दिनदहाड़े मोटर साइकिल से आए दो चोरों ने मकान का ताला तोड़कर घर में रखे लाखो रुपए मूल्य के सोने चांदी के

जेवर जिसमें सोने का मुखड़ा ,अंगूठी, हार चांदी की चैन एवं नगद पैसे चुरा लेगए दोनों चोर के मुंह पर कपड़ा बधा हुआ था। पूर्व मे हुई चोरी की घटना के अनुसार इस बार भी दोनों चोर चोरी की घटना को अंजाम देकर मोटरसाइकिल से जाते हुए सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं।

एक सप्ताह में हुई अनेक स्थानों पर चोरी- इस सप्ताह चोरों ने पवित्र नगरी के अनेक स्थानों पर एक के बाद एक चोरी की घटना को अंजाम दिया और हर बार चोर सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए किंतु अब चोरो का कोई सुराग नहीं लग सका है। इस चोरी की घटना से पूर्व नागपुर रोड पर स्थित आकाश इलेक्ट्रॉनिक्स एवं गल्ला व्यापारी सुभाष साहू की दुकान को चोरों ने निशाना बनाया था। नागपुर रोड मुख्य मार्ग पर स्थित राजेश कवडकर की इलेक्ट्रॉनिक दुकान का शटर का ताला तोड़कर चोरों ने लाखों रुपए मूल्य का इलेक्ट्रॉनिक सामान एवं नगद पर हाथ साफ किया था, इस बार भी चोर सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए थे पिछली बार की चोरी में संदिग्ध चोरों को स्कूटी से आते हुए देखा गया था जिनकी संख्या दो थी किंतु इस बार चोरी की घटना का जो सीसीटीवी फुटेज सामने आया है उसमें चोर मोटरसाइकिल पर सवार होकर जाते दिखाई दे रहे हैं जिनकी संख्या भी दो है।

जून में परदे पर उतरेगी 6 बड़ी फिल्में

फिल्म के लिहाज से मई का महीना बॉलीवुड के लिए काफी सुस्त रहा। इसका कारण आईपीएल मैच बताए जा रहे हैं। क्योंकि, इस महीने सिर्फ अजय देवगन की रेड-2 ही सिनेमाघरों में रिलीज हुई। लेकिन, आने वाले जून में गर्मी का तापमान भले ही ज्यादा हो, लेकिन थिएटर में 6 फिल्मों को देखने के बाद दर्शकों के दिल तो ठंडक जरूर मिलने वाली है जो बॉक्स ऑफिस का पासा पलट सकती है।

साल का पहला क्वार्टर बॉक्स ऑफिस पर काफी अच्छा साबित हुआ था। 'स्काई फोर्स' से लेकर 'इमरजेंसी' और 'गेम चेंजर' जैसी फिल्मों से जनवरी के महीने में शुरुआत हुई। फरवरी में 'छावा' आई और इस फिल्म ने बॉलीवुड फिल्मों की लाज बचाई। 800 करोड़ से ज्यादा का बिजनेस करके ये फिल्म अभी तक बॉक्स ऑफिस पर रूल कर रही है। 2025 में दूसरी तिमाही आई और अप्रैल में कई बड़ी फिल्में थिएटर में रिलीज हुई। 'जाट' से लेकर 'केसरी चैप्टर 2' को जिस तरह ओपनिंग मिली उससे काफी उम्मीद थी। लेकिन, दोनों ही फिल्मों का भट्टा बैठ गया। मई में भी सिर्फ एक ही फिल्म रिलीज हुई, जो थी अजय देवगन की 'रेड 2'। दूसरे क्वार्टर की शुरुआत बॉक्स ऑफिस पर भले ही धीमी रही हो, लेकिन लगता है जून का महीना बॉलीवुड को मालामाल करके जाएगा। क्योंकि, अगले महीने 6 बड़ी फिल्में थिएटर में रिलीज हो रही हैं।

ठग लाइफ - कमल हासन की फिल्म 'ठग लाइफ' के साथ जून की शुरुआत बॉक्स ऑफिस पर बहुत ही दमदार तरीके से होगी। मल्टीस्टारर इस गैंगस्टर एक्शन ड्रामा फिल्म का निर्देशन मणि रत्नम ने किया है। फिल्म में कमल हासन के अलावा सिलाम्बरासन, तृषा कृष्णन, अभिरामी, ऐश्वर्या लक्ष्मी, अशोक सेल्वन सहित कई बड़े सितारे नजर आएंगे। ये फिल्म वर्ल्डवाइड आईमैक्स फार्मेट में रिलीज होगी। ये फिल्म हिंदी में भी रिलीज होगी। फिल्म की रिलीज डेट 5 जून है।

हाउसफुल-5 - 'ठग लाइफ' के अगले ही दिन थिएटर में दस्तक देने के अक्षय कुमार अपनी 'हाउसफुल' की पलटन के साथ आ रहे हैं। उनकी सबसे बड़ी कॉमेडी फ्रेंचाइजी में इस बार एक साथ 17 बड़े सुपरस्टार्स नजर आएंगे। इस बार कहानी के साथ-साथ क्लूज पर खूनी खेल देखने में भी ऑडियंस को बहुत ही मजा आने वाला है। फिल्म की रिलीज डेट 6 जून होगी।

सितारे जमीन पर - जून में अगले महीने धमाल मचाने वाली और बॉक्स ऑफिस का अकाउंट भरने वाली फिल्मों की लिस्ट में आमिर खान और जेनेलिया डीसूजा की फिल्म 'सितारे जमीन पर' भी शामिल है। इस फिल्म से मिस्टर परफेक्शनिस्ट 3 साल बाद परदे पर लौट रहे हैं। स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म के ट्रेलर को रिस्पांस मिला है, उससे ये साफ जाहिर है कि मूवी एक नया रिकॉर्ड बनाने में कामयाब हो सकती है। यह फिल्म 20 जून को थियेटर में रिलीज होगी।

कुबेरा- आमिर खान की फिल्म 'सितारे जमीन पर' को टक्कर देने के लिए सोशल थ्रिलर फिल्म 'कुबेरा' भी थिएटर में उसी दिन रिलीज हो रही है। शेखर कम्मुला के निर्देशन में बनी इस फिल्म में धनुष मुख्य भूमिका में हैं, वहीं नागार्जुन, रश्मिका मंदाना और जिम सराब ने अहम भूमिका निभाई है। ये फिल्म हिंदी में भी रिलीज होगी। फिल्म 20 जून को रिलीज होगी।

मां- काजोल बैक टू बैक अपनी परफॉर्मेंस से दर्शकों को हैरान कर रही हैं। असल जिंदगी में मां का किरदार अच्छे से निभाने वालीं काजोल अब इस टाइटल के साथ पर्दे पर फिल्म लेकर आ रही हैं, जो देवगन प्रोडक्शन के बैनर तले बनी है। मूवी में काजोल के अलावा इंद्रनील सेन और रोनित रॉय मुख्य भूमिका में हैं। यह फिल्म 27 जून को रिलीज होगी।

ज्ञानवापी फाइल्स - राजस्थान के उदयपुर में 28 जून 2022 को दो लोगों ने टेलर कन्हैया लाल साहू की गला रेतकर हत्या कर दी थी। अब इस रियल घटना पर फिल्म बन चुकी है। 'ज्ञानवापी फाइल्स' जो जल्द ही काजोल की फिल्म 'मां' के साथ बॉक्स ऑफिस पर टक्कर लेगी। भारत एस श्रीनाथ और जयंत सिन्हा के निर्देशन में बनी इस फिल्म में विजयराज, प्रीति झंगियानी और मुस्ताख खान मुख्य भूमिका में दिखाई देंगे। रिलीज डेट है 27 जून।

रियल बॉक्स

'ओटीटी' अब अपराध कथाओं से मुक्त होने लगा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

सिनेमा की दुनिया में कोरोना काल और उसके बाद बड़ा बदलाव आया। क्योंकि, ये वो समय काल था, जिसने जीवन के हर क्षेत्र पर असर डाला। यहां तक कि मनोरंजन की दुनिया भी इससे प्रभावित हुई। सिनेमाघर बंद हो गए, टेलीविजन के सीरियलों की शूटिंग बंद होने से टीवी पर भी पुराने कार्यक्रम दिखाए गए। ऐसे में मोबाइल पर 'ओटीटी' नाम से मनोरंजन की एक दुनिया का जन्म हुआ। कोरोना के दौरान जब दिल बहलाने के सारे रास्ते बंद हो गए, तो इसी ओटीटी ने लोगों का मन बहलाया। कोरोना काल के खत्म होने के बाद समझा जाने लगा था, कि अब ओटीटी के दर्शकों की संख्या पर असर आएगा, पर ऐसा नहीं हुआ। मोबाइल तक सीमित मनोरंजन का यह नया माध्यम स्मार्ट टीवी का प्रमुख हिस्सा बन गया और इसका दायरा भी विस्तारित हुआ। शुरुआत में ओटीटी पर आने वाली अधिकांश वेब सीरीज अपराध केंद्रित होती थी। क्रिमिनल जस्टिस, महाराजा, पाताल लोक, दिल्ली क्राइम, फोरेंसिक, और 'आर्या' जैसी कई वेब सीरीज ने दर्शकों को आकर्षित भी किया। लेकिन, धीरे-धीरे दर्शक इन एक जैसी अपराध कथाओं से ऊबने लगे। इन्हें पूरा परिवार एक साथ देख भी नहीं सकता है। समाज में भी ओटीटी पर इस तरह के मसाले को लेकर विरोध की आवाज उठने लगी। किसी भी मनोरंजन की एकरूपता ज्यादा दिन दर्शकों की पसंद पर खरी नहीं उतर सकती। लेकिन, एक-डेढ़ साल में ओटीटी पर तेजी से बदलाव आता दिखाई देने लगा। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि राजश्री जैसे प्रोडक्शन हाउस ने भी अपनी पहली वेब सीरीज 'बड़ा नाम करेगा' ओटीटी के लिए बनाई। पारिवारिक रिश्तों की उलझन वाले किस्सों को प्रधानता दी जाने लगी, इसका नतीजा ये हुआ कि जिस ओटीटी पर कभी अपराध की बाढ़ आ गई थी, वहां अब रिश्तों का सामंजस्य दिखाई देने लगा।

अब आइए उन वेब सीरीज और ओटीटी के लिए बनी फिल्मों पर नजर डालते हैं, जो ओटीटी का चेहरा बदलने का जरिया बने। आरती कदव डायरेक्टेड फिल्म 'मिसेज' एक ऐसी कहानी को कहती है, जो हर महिला से जुड़ी लगती है। इसमें सान्या मल्होत्रा की मुख्य भूमिका है। इसमें एक महिला के संघर्ष को दिखाया गया। वो कैसे पितृसत्ता की मानसिकता से लड़कर अपने सपनों को पूरा करती है। फिल्म की कहानी ऋचा (सान्या मल्होत्रा) की है। उसे डांसर बनना था, पर घर की जिम्मेदारियों के बीच उसके सपने पीछे छूट जाते हैं। यह मलयाली फिल्म 'द ग्रेट इंडियन किचन' का हिंदी रीमेक है। सान्या मल्होत्रा की ही फिल्म 'मीनाक्षी सुंदरेश्वर' भी ऐसी महिला की कहानी है, जिसके पति की शादी के कुछ दिन बाद ही दूसरे शहर में नौकरी लग जाती है। लांग डिस्टेंस मैरिज के साइड इफेक्ट दिखाती 'मीनाक्षी सुंदरेश्वर' में सान्या मल्होत्रा ने बेहतरीन एक्टिंग की है। फिल्म की शुरुआत बेहद रोचक है। मैरिज ब्यूरो की गलती से सुंदरेश्वर का परिवार मीनाक्षी के घर पहुंच जाता है। हालांकि, इस कंफ्यूजन के बावजूद मीनाक्षी और सुंदरेश्वर एक-दूसरे को पसंद कर लेते हैं। सुंदरेश्वर जॉब की तलाश में है और बेंगलुरु की ऐप डेवलप कंपनी में उसे जॉब मिल जाती है। लेकिन, उसकी कंपनी शादीशुदा लोगों को जॉब नहीं देती है। ऐसे में अपनी शादी की बात सुंदरेश्वर को छुपानी पड़ती है। रवीना टंडन की फिल्म 'पटना शुक्ला' सामाजिक मुद्दे पर बनी फिल्म है। ये एक हाउसवाइफ की कहानी जो वकील है, पर कोई उसे गंभीरता से नहीं लेता। वो अपनी पहचान पाने के लिए संघर्ष करती है। एक समय ऐसा आता है, जब उन महिला वकील के हाथ एक ऐसा केस लगता है, जो पूरे शिक्षा जगत में हलचल पैदा कर देता है।

फिल्मों में राजश्री प्रोडक्शन नाम अपनी अलग पहचान रखता है। ऐसे में ओटीटी में उनका आना मनोरंजन के इस माध्यम को सहयोग करेगा। 'बड़ा नाम करेंगे' राजश्री की वेब सीरीज है, जिसमें बड़ी सहजता से रिश्तों का तानाबाना बुना गया है। कोरोना काल में मुंबई से शुरू होने के बाद ये कहानी उज्जैन, इंदौर और रतलाम पहुंच जाती है। कथानक की नायिका और नायक संयोग से पांच दिन एक ही घर में नीचे रहने को मजबूर होते हैं। बाद में ऐसे हालात बनते हैं कि उनकी शादी की बात चल पड़ती है। दोनों एक-दूसरे को पहले से जानते हैं, ये बात बताने का समय नहीं मिलता और परिवार के 'फूफाजी' दोनों की शादी में अड़चन बनने पर आमादा हो जाते हैं। निष्कर्ष यह कि अगर साथी पसंद का हो, तो उसका हाथ अपने हाथों में लेकर कहीं भी निकला जा सकता है। इस सीरीज के एपिसोड बड़े होने के बावजूद दर्शकों को हिलने नहीं देते। ऐसी ही एक वेब सीरीज है 'पैठणी!' वास्तव में तो महाराष्ट्र के पैठण इलाके में हाथ से बुनी जाने वाली साड़ी होती है। पर, इस वेब सीरीज में ये एक बेटी और उसकी मां की कहानी है। मां पैठणी बुनने वाले एक केंद्र में कारीगरी का काम करती है। उसका अनुभव है कि पैठनी बुनने वालों को कभी पहनने का सौभाग्य नहीं मिलता। पर, बेटी ये सपना सच कर देती है। यह कथानक मां और बेटी को भावनाओं, चुनौतियों से गुजारकर स्थायी बंधन तक ले जाती है।

फिल्म 'आचारी बा' ऐसी महिला है, जिसके हाथ में स्वादिष्ट अचार बनाने का जादू है। लेकिन, यह सिर्फ स्वाद नहीं है, इससे उनकी यादें और भावनाएं जुड़ी हैं। एक दशक के इंतजार के बाद बा को उनका बेटा मुंबई बुलाता है। वहां पहुंचने पर उसे पता चलता है कि बेटे ने उसे परिवार के साथ समय बिताने के लिए नहीं, बल्कि घर और पालतू कुत्ते 'जेनी' की देखभाल करने के लिए बुलाया है। बेटा और बहू कुछ दिन के लिए विदेश यात्रा पर जा रहे हैं। शहर की भागदौड़ और अजनबी माहौल के बीच बा खुद को एक शरारती कुत्ते के साथ घर में अकेला पाती है। वहीं 'आचारी बा' का एक पुराना वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होता है, जिसमें वे अचार की रेसिपी बता रही होती हैं। यहीं से बा के 'आचारी बा' बनने का सफर शुरू होता है। जिसमें कबीर बेदी उनका साथ देते हैं।

कुछ अलग सी कहानियों में एक 'द स्टोरी टेलर' भी है, जो सत्यजीत रे की शॉर्ट स्टोरी 'गोलपो बोलिये तारिणी खुरो' पर आधारित है। ये एक कहानीकार पर केंद्रित है, जिसे एक अमीर बिजनेसमैन अपने लिए नियुक्त करता है। इस बिजनेसमैन को अनिद्रा की बीमारी है। उसे रात में नींद नहीं आती। यह कहानीकार उसे सोने में मदद करने के लिए रात के समय कहानियां सुनाता है। लेकिन कहानी में मोड़ तब आता है, जब हमें पता चलता है कि इस बिजनेसमैन के असली इरादे कुछ और ही हैं। परेश रावल ने तारिणी बंदोपाध्याय की भूमिका में जान डाल दी है। आमिर खान प्रोडक्शन्स के बैनर तले बनी किरण राव द्वारा निर्देशित फिल्म 'लापता लेडिज' इस साल सुर्खियों में रही। इसे भारत की तरफ से ऑस्कर के लिए भी भेजा गया था। लेकिन, फिल्म अब इससे बाहर हो गई। ये फिल्म औरतों को अपने हिसाब से जीना सिखाती है। हर महिला में आत्मविश्वास जगाती है, जो अपने सपनों के लिए संघर्ष करती है। गंभीर विषय होने के बावजूद इसे हल्का रखा गया, जिससे कहानी सीधे दर्शकों के दिल तक पहुंचती है। फिल्म भले ही ग्रामीण पृष्ठभूमि पर बनी है। लेकिन, इसकी कहानी शहरों की हकीकत से भी रूबरू कराती है।

पंजाबी गायक अमर सिंह चमकीला की बायोपिक 'चमकीला' में दिलजीत दोसांझ ने मुख्य भूमिका निभाई है। इम्तियाज अली के निर्देशन में बनी यह फिल्म लुधियाना के गांव धुबरी में जन्मे पंजाबी म्यूजिक इंडस्ट्री में साल 1979 से 1988 तक राज करने वाले गायक और 'एल्विश ऑफ पंजाब' कहे जाने वाले अमर सिंह चमकीला के विवादास्पद जीवन पर आधारित है। उनकी गायकी के लोग दीवाने थे। 27 साल की उम्र में वो इस दुनिया को अलविदा भी कह गए। अज्ञात हमलावरों ने अमर सिंह चमकीला की हत्या कर दी थी। राजकुमार राव की फिल्म 'श्रीकांत' भी अपना असर छोड़ने में कामयाब रही. ये फिल्म वास्तव में उद्योगपति श्रीकांत बोल्ला की कहानी है, जो अपनी आंखों से दुनिया तो नहीं देख सकते, लेकिन सपने, बड़े सपने जरूर देखते हैं और उन्हें पूरा भी करते हैं। उन्होंने करीब 500 करोड़ रुपये की कंपनी खड़ी कर विकलांगों के लिए रोजगार के अवसर खोले थे।

खिलाड़ियों का जिक्र किया जाए, तो 'चंदू चैंपियन' कबीर खान के निर्देशन में बनी बायोपिक फिल्म है, जो परदे पर तो खास कमाल नहीं दिखा सकी, लेकिन ओटीटी पर इस फिल्म को पसंद किया गया। कार्तिक आर्यन की अदाकारी ने खूब तारीफें बटोरी। यह फिल्म भारत के पहले पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता मुरलीकांत पेटकर पर आधारित है। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए खेलों में अपनी पहचान बनाई थी। बॉक्सिंग के वंडर बॉय बनने और आखिर में 1965 की जंग में अपने शरीर पर 9 गोलियां खाने तक जारी रहा। जूनून और लगन की बुनियाद पर वह देश का पहला पैरालंपिक गोल्ड मेडल जीतने वाले खिलाड़ी बने। अजय देवगन की फिल्म 'मैदान' फुटबॉल से जुड़ी सत्य घटना पर आधारित है। यह महान कोच सैयद अब्दुल रहीम की कहानी है, जिनकी भूमिका अजय देवगन ने निभाई है। यह कहानी 1952 के समर ओलंपिक्स से शुरू होकर 1962 के एशियन गेम्स पर खत्म होती है। इसके अलावा भी कई ऐसी वेब सीरीज हैं, जो दर्शकों पसंद में शामिल हो गई।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

परेश रावल को महंगा पड़ेगा 'हेरा फेरी 3' छोड़ना

परेश रावल के 'हेरा फेरी 3' को बीच में छोड़ने से बड़ी मुसीबत हो गई। अक्षय कुमार के प्रोडक्शन हाउस 'केप ऑफ गुड फिल्म्स' ने उन्हें नोटिस भेजा है। क्योंकि, फिल्म छोड़ने से पहले ही उन्हें 11 लाख रुपये दिए गए थे। परेश रावल ने 'हेरा फेरी 3' अचानक बीच में छोड़कर बड़ी मुसीबत मोल ले ली। अक्षय कुमार के प्रोडक्शन हाउस 'केप ऑफ गुड फिल्म्स' ने अभिनेता को फिल्म छोड़ने के लिए नोटिस जारी किया।

अक्षय की कंपनी की तरफ से भेजे गए नोटिस में दावा किया गया है कि परेश को प्रोजेक्ट से बाहर निकलने से पहले ही 11 लाख की पेमेंट दी जा चुकी थी। अब अक्षय के प्रोडक्शन हाउस का रिप्रेजेंट करने वाली वकील पूजा तिडके ने कहा है कंपनी ने फिल्म पर बहुत पैसा खर्च किया है, इसलिए इस मामले में कानूनी कार्रवाई हो सकती है।

अक्षय की प्रोडक्शन हाउस की वकील ने कहा कि मुझे लगता है कि इसका कानूनी अंजाम बहुत गंभीर होगा। परेश रावल के इस फैसले से निश्चित रूप से फ्रैंचाइजी को नुकसान होगा। हमने तो उन्हें लेटर भेजा और बताया कि उन्हें कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है। एक्टर्स को पैसे देने पड़े, टीम का खर्च आया, कैमरा और बाकी सामान और ट्रेलर बनाने में भी खर्च किया गया है।

पूजा ने बताया कि परेश इस प्रोजेक्ट में शामिल थे, क्योंकि उन्होंने ट्रेलर शूट किया था और फिल्म के लिए साढ़े तीन मिनट की शूटिंग भी की थी। उन्होंने कहा कि फिल्म के ट्रेलर की शूटिंग शुरू हो गई थी और फिल्म का कुछ हिस्सा भी शूट हो चुका था। अचानक परेश ने कहा कि वह अब इस फिल्म से नहीं जुड़े हैं और इससे कोई लेना-देना नहीं रखना चाहते। यह खबर सुनकर सभी लोग हैरान रह गए।

पूजा ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा, लेकिन फिल्म और उसके कलाकारों की बदनामी हो गई है। इससे दर्शकों में भी निराशा है। पूजा ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि सब ठीक होगा, लेकिन अभी हमें कानूनी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि परेश ने अभी तक कानूनी नोटिस का जवाब नहीं दिया, लेकिन उन्हें जवाब देने के लिए सात दिन का समय दिया गया है। पूजा ने कहा कि फिल्म में बहुत पैसा लग चुका है और शूटिंग शुरू हो गई थी। अब सबकी प्लानिंग खराब हो गई है और सभी को नुकसान हो रहा है।

अशोक जोशी

साउथ का एक सितारा जिसके सामने हर कोई हारा

सिनेमा के शुरूआती समय में दक्षिण भारत में एक ऐसे कलाकार ने जन्म लिया था, जिसने बाद में भारतीय सिनेमा की तकदीर बदल दी। ये थे प्रेम नजीर, जिन्हें मलयालम सिनेमा का सदाबहार हीरो कहा जाता रहा। वे मलयालम के अकेले ऐसे एक्टर रहे, जिनके नाम चार

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड हैं। उन्होंने 1952 में फिल्म 'मरूमकल' से अपने करियर की शुरुआत की थी। करीब 30 सालों तक उन्होंने मलयालम सिनेमा पर राज किया और कई रिकॉर्ड बनाए, जिनको आज तक कोई दूसरा सितारा तोड़ नहीं पाया।

आज सिनेमा का स्वरूप एकदम बदल चुका है। यहां सफलता के पैमाने बदल गए हैं। सौ करोड़ से शुरू हुई सफलता कई सौ करोड़ तक पहुंच जाती है। इसके बावजूद कोई सितारा ऐसा नहीं है, जो सफलता का वह कीर्तिमान स्थापित करे जो गुजरे जमाने के दक्षिण भारत के सितारा प्रेम नजीर ने स्थापित किया। उनकी हिमालयीन सफलता के आगे आज के अमिताभ से लेकर तीनों खानों और दक्षिण भारत के तमाम मौजूदा सितारों की उपलब्धियां बौनी साबित होती है। इस सितारे ने फिल्मों की संख्या से लेकर डबल रोल और ट्रिपल रोल्स और एक साल मे सबसे ज्यादा फिल्में करने और एक ही अभिनेत्री के साथ सर्वाधिक फिल्मों में काम करने का जो कीर्तिमन स्थापित किया है वह आज भी बरकरार है।

सिनेमा के शैशवकाल के दौरान साउथ इंडिया में एक ऐसे स्टार ने जन्म लिया था, जो आने वाले वक्त में भारतीय सिनेमा की तस्वीर और तकदीर बदलने वाला था। प्रेम नजीर को मलयालम सिनेमा का सदाबहार हीरो कहा जाता था। वह देश के एकमात्र एक्टर रहे, जिनके नाम चार गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड रहे। उन्होंने 1952 में फिल्म 'मरूमकल' से अपने करियर की शुरुआत की थी। उसी साल उन्होंने 'विसापिनटे विली' में भी काम किया। करीब 30 सालों तक उन्होंने मलयालम सिनेमा पर राज किया और कई रिकॉर्ड बनाए, जिनको आज तक कोई दूसरा सितारा तोड़ नहीं पाया।

एक्टिंग की दुनिया में प्रेम नजीर का आगमन 1951 में हुआ, जब वे कॉलेज में पढ़ रहे थे। प्रेम नजीर की ने 'द मर्चेंट ऑफ वेनिश प्ले' से डेब्यू किया था। इसमें निभाए रोल के लिए प्रेम नजीर को बेस्ट एक्टर का रोल मिला था। इसके एक साल बाद ही प्रेम नजीर को पहली फिल्म का ऑफर मिला। इस फिल्म की रिलीज तक प्रेम नजीर का नाम अब्दुल खादर था। लेकिन, दूसरी फिल्म 'विसापिनटे विली' के प्रदर्शन के समय अब्दुल खादर ने अपना नाम बदल लिया और वे प्रेम नजीर बन गए। पचास के दशक में प्रेम नजीर को जबरदस्त स्टारडम मिला। उनकी छवि एक सदाबहार और रोमांटिक हीरो की हो गई थी। लड़कियां और हीरोइनें तो प्रेम नजीर की खुबसूरती पर फिदा थीं। देखते ही देखते प्रेम नजीर मलयालम सिनेमा के पहले असली स्टार बन गए। उनका स्टारडम 60 और 70 के दशक में भी छाया रहा।

उस दौरान फिल्मों में प्रेम नजीर की जोड़ी अभिनेत्री शीला के साथ काफी पसंद की गई। उन्होंने शीला के साथ एक-दो नहीं बल्कि 130 फिल्में कीं, जिनमें वह उनके ऑपोजिट लीड हीरो थे। इसके लिए प्रेम नजीर का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया। प्रेम नजीर के नाम एक और वर्ल्ड रिकॉर्ड रहा है। उन्होंने 720 फिल्मों में लीड रोल प्ले किया और यह रिकॉर्ड आज तक कोई नहीं तोड़ पाया है। प्रेम नजीर के रिकॉर्ड सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रहें। उनके नाम दो और रिकॉर्ड हैं। प्रेम नजीर के नाम एक साल में रिलीज अधिकतम फिल्मों का रिकॉर्ड है। 1979 में उनकी 41 फिल्में रिलीज हुई थीं। इसके अलावा उनके नाम 85 हीरोइनों के साथ हीरो का रोल करने का भी रिकॉर्ड दर्ज है। इसके अलावा 1973 से 1977 के बीच उन्होंने रिलीज हुई 30 फिल्मों में मुख्य भूमिका निभाई थी।

प्रेम नजीर का डंका 70 के दशक तक खूब बजा, लेकिन 80 के दशक में वह चरित्र अभिनेता के रूप में खूब चमके। उनके अचानक ही रोमांटिक और लीड हीरो वाले किरदारों से कैरेक्टर रोल में शिफ्ट होने से फैंस दुखी थे। लेकिन, सपोर्टिंग रोल में भी प्रेम नजीर ने ऐसे पावरफुल किरदार निभाए कि एक बार फिर उनकी लोकप्रियता बुलंदी पर पहुंच गई। एक्टिंग के दौरान प्रेम नजीर ने फिल्मों के दो शैलियों को काफी लोकप्रिय कर दिया था। या यूं कहें कि उन्होंने दो नए जॉनर की शुरुआत की थी। इनमे ऐ एक थी खोजी जासूस की फिल्मों की शैली और दूसरी वडाकक्नपाट्टू शैली। जासूसी में वे साउथ के जेम्स बाण्ड कहलाते थे।

1951 से लेकर 1980 के दशक तक वो लगातार फिल्मों में एक्टिव रहे और लोगों के बीच अपनी जबरदस्त पहचान बनाए रखी. प्रेम नजीर ने अपने पूरे करियर में करीब 720 फिल्मों में काम किया.। इसमें से लगभग 400 फिल्में सुपर हिट रहीं, जिनमें से 50 फिल्में ब्लॉकबस्टर साबित हुईं। प्रेम नजीर की आखिरी फिल्म 'कदथनाडन अंबादी' थी, जो उनके निधन के एक साल बाद 1990 में रिलीज हुई। प्रेम नजीर अपने काम को पूजा मानते थे। यही कारण था कि उनके काम में कभी थकान नजर नहीं आई। लोग कहते थे कि उनकी एक्टिंग इतनी नेचुरल होती थी, कि उन्हें देखकर हमेशा ताजगी महसूस होती थी। फिल्म इंडस्ट्री में काम का प्रेशर होने के बावजूद उन्होंने अपनी परफॉर्मेंस में कभी कोई कमी नहीं देखने को मिली। उनके काम की तारीफ सिर्फ फैंस ने ही नहीं, बल्कि इंडस्ट्री के लोग भी दिल खोलकर की करते थे।

प्रेम नजीर को डायबीटीज था। वह अपनी सेहत से ज्यादा काम को तरजीह देते थे और यही लापरवाही उन्हें भारी पड़ गई। वह समय पर खाना नहीं खाते थे, जिसकी वजह से उन्हें बाद में पेप्टिक अल्सर हो गया और फिर वह चल बसे। प्रेम नजीर ने अपने दशकों लंबे करियर में कई अवॉर्ड और सम्मान जीते थे। 1981 में उन्होंने केरल स्टेट फिल्म अवॉर्ड, फिल्मफेयर स्पेशल अवॉर्ड साउथ और नैशनल अवॉर्ड जीता था। 1983 में सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया था।

मेरी बात रही... मेरे मन में !

प्रकाश पुरोहित

मेरी अति-प्राचीन इच्छा बलवती हो रही है कि एक बार, कम से कम एक बार तो चूड़ीदार पजामा पहन हूं। इन दिनों जिसे देखो यही पहने घूम रहा है तो और भी बेचैनी बढ़ रही है कि पीएम, एचएम और डीएम तक इस उम्र में छप्पन इंच की छाती लिए चूड़ीदार पाजामा ना सिर्फ पहन लेते हैं, बल्कि उसमें चल-फिर भी लेते हैं तो मेरी हिम्मत बढ़ने लगती है। सोचता हूं, जोखिम ले ही लूं एक बार तो। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा, साबुत टांग ही तो टूटेगी ! कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरा वजन बावन किलो और छाती छब्बीस इंच है, इसलिए चूड़ीदार पाजामा नहीं पहन पाया अब तक।

किंवदंती है कि बचपन में मां ने किसी राष्ट्रीय उत्सव के मौके पर मुझे चूड़ीदार पाजामे में उतारा था। जिस तरह रोज बस्ते में किताबें और पट्टी भरती थी, वैसे ही मुझे उस रोज चूड़ीदार में भर दिया था और मैं खूब रोया था कि चड्डी ही पहननी है !

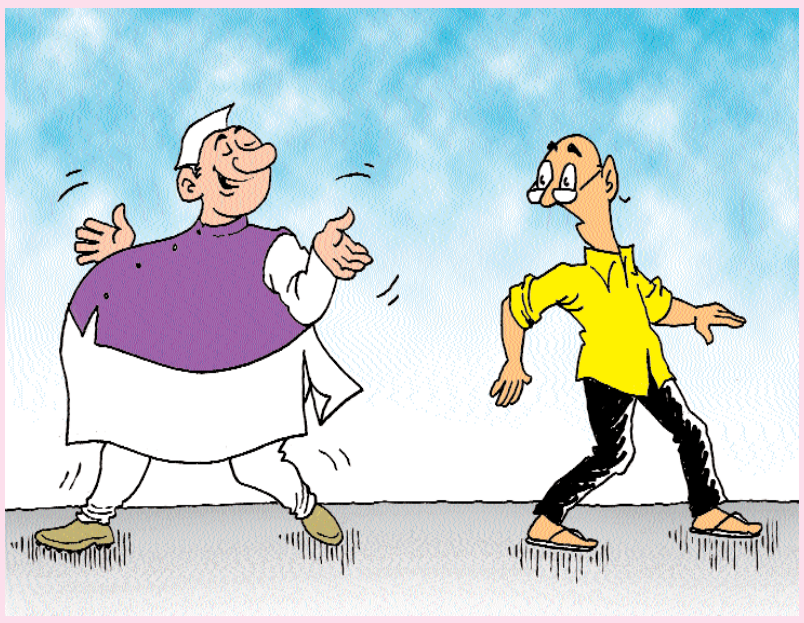

वैसे तो पाजामा पहनते हुए ही एक बार फ्रैक्चरशुदा हो चुका हूं, इसलिए एकदम हिम्मत नहीं कर पा रहा हूं। दरअसल, मुझे यह पता नहीं है कि पाजामा पहनने के लिए पहले बायां पैर उठाना चाहिए या दायां। इस बारे में लिखित दिशा-निर्देश भी नहीं है। आम पाजामा ही इतना मुश्किल है तो फिर यह तो सोच से भी बाहर है, क्योंकि मेरे परिवार में लुंगी, तहमद या मुंडू की परंपरा रही है और उसमें ऐसी किसी कसरत या दिमागी माथापच्ची की जरूरत नहीं पड़ती है, खड़े-खड़े ही सबके सामने गांठ लगा सकते हैं, जबकि पाजामा हमेशा प्रायवेसी की डिमांड करता है, क्योंकि पहनते हुए एकाध बार गिरने का खतरा हमेशा बना रहता है।

जब इन सवा-डेढ़ क्विंटल वजनी नेताओं को देखता हूं तो यह तो समझ आ जाता है कि ये अपने बूते तो चूड़ीदार पाजामा नहीं पहन पाते होंगे। अब ऐसी कोई मशीन तो इजाद हुई नहीं है, जो यह काम कराती हो। मानव-श्रम की कल्पना करता हूं तो गुदगुदी होने लगती है कि कैसे इतने वजनी शरीर को दो-तीन मुस्टंडे उठाते होंगे और चूड़ीदार पाजामे में उतारते होंगे, क्योंकि ऐसा करना इनके अकेले के बस की तो बात नहीं है। क्या ऐसा करते हुए इन लोगों को हंसी नहीं आती होगी या फिर यह सोच कर खामोश रहते होंगे कि गेहूं भर रहे हैं बोरे में या रोज ही एक जैसा ठूंसते और खाली करते हैं तो कुछ असर नहीं होता है।

यहां मुझे यह भी लगता है कि चलिए, चूड़ीदार पाजामा उतारने में तो यह सुविधा हो सकती है कि माननीय को पलंग पर पटक दिया और दोनों टांगों से चूड़ीदार पाजामा चार लोगों ने मिल कर खींच लिया। हो सकता है, शुरू में ऐसा करते नौसिखिये दुःशासन जमीन पर जा गिरे हों पाजामे सहित, बाद में संभल जाते होंगे। सुना है, हर काम के लिए लोग तय रहते हैं, दाढ़ी से लेकर जूते पहनाने तक। तब मुझे यह भी लगता है कि जो झुक कर जूते नहीं पहन पाते हैं, क्या उनके लिए चूड़ीदार पाजामा ज्यादा जोखिम भरा अभियान नहीं है !

पतलून में यह सुविधा है कि थोड़ा तो कड़क रहता है और उसके हुक को कहीं अटकाया भी जा सकता है। दूसरे, पतलून में नाड़ा नहीं होता है और बेल्ट होने से सुविधा हो जाती है। पतलून में नाड़े की जगह बटन भी होते हैं तो एक हाथ फ्री हो ही जाता है, जबकि पाजामे के साथ यह दिक्कत है कि एक हाथ से नाड़े के दोनों सिरे यूं संभालने पड़ते हैं, जैसे घोड़े की रास पकड़ रखी हो। पतलून और पाजामे में यही मूल भेद है, लेकिन ये चूड़ीदार पाजामा तो और भी नाजुक होता है कि जरा से वजन से गोदी-मीडिया की तरह एकदम झप्प से चरणों में गिर जाता है।

सादा पाजामा पहनते हुए जो हताहत हो सकता हो, उसे चूड़ीदार पहनने के पहले वैसी ही तैयारी जरूरी हो जाती है, जैसे एवरेस्ट फतह के लिए पर्वतारोही करते हैं। अभी मेरे पास चूड़ीदार पाजामा नहीं है, लेकिन हिम्मत करने के लिए तो उसका पास होना जरूरी नहीं है। कल्पना करो कि.....के आधार पर तो हम बचपन से गुत्थियां सुलझाते ही रहे हैं। इसके खतरों से वाकिफ हूं, लेकिन दिल है कि मानता नहीं !

जब भी बाजार से गुजरता हूं तो यह देखता चलता हूं कि कहीं चूड़ीदार पाजामा लटका नजर आ जाए तो पहनने के लिए ना सही, अपने संतोष के लिए ही सही, खरीद कर रख लूं, लेकिन सब चीजें लटकी रहती हैं दुकानों के बाहर, यहां तक कि पाजामा भी, लेकिन चूड़ीदार के दर्शन नहीं हो पाते हैं। तो ये नेता लोग आखिर लाते कहां से हैं ! अब किसी से यह पूछ भी नहीं सकते कि 'श्रीमान, ये मजबूत पाजामा कहां से खरीदा या सिलवाया !' याद होगा, पहले शिकारी ही ऐसे पतलून या पाजामे पहनते थे, तो क्या आज भी इसी वजह से आम आदमी नहीं पहन पाता है !

जब अनुभवी नेताजी से मैंने अपनी हसरत डिस्कस की तो उनका जवाब था... मियां, अच्छे-भले गृहस्थ हो, क्यों यहां-वहां मारे-मारे फिरना चाहते हो ! चूड़ीदार पाजामा के चक्कर में घरबार छोड़ना पड़ता है, तभी तो आम आदमी नहीं पहनता है। इसे शुभ नहीं मानते हैं। एक बार पहन लिया तो फिर घर में जी नहीं लगता है, भागने का मन करता है। हर सुबह कहीं दूर निकल जाने की जिद रहती है... और मार्गदर्शक मंडल में शामिल हो जाते हैं...और भी ना जाने क्या-क्या बोलते रहे।

मन के भीतर के सूरज की रोशनी

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

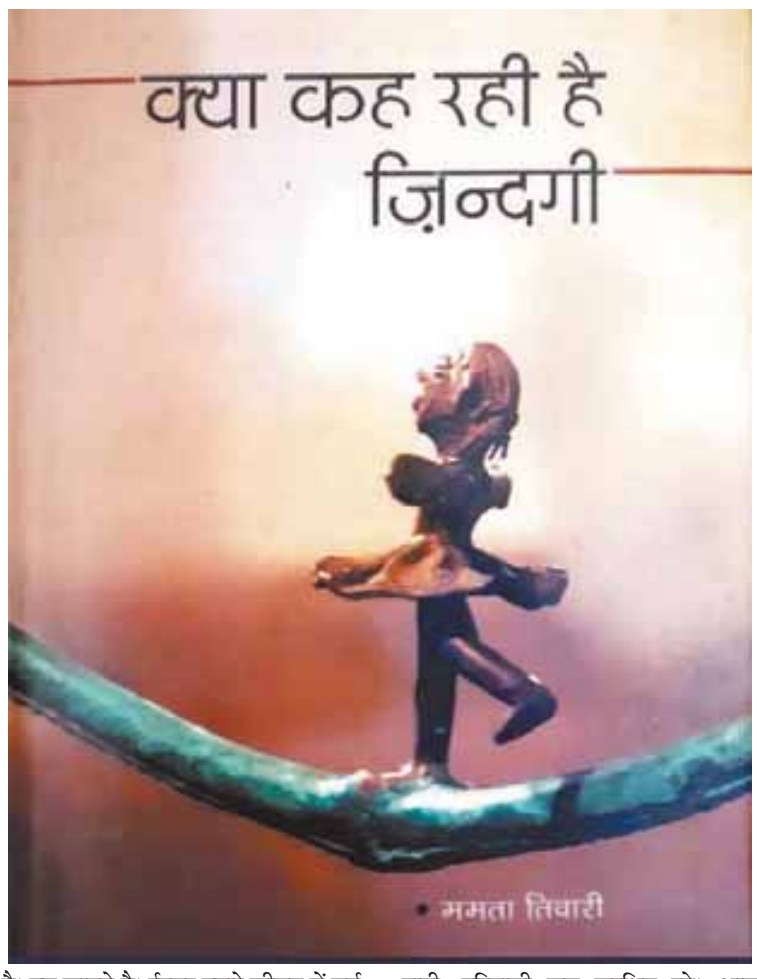

हर शय दावा कर रही है, कि
सूरज उसी का है
पहाड कहते है निकलता है सबसे पहले मेरे पीछे
डूबने पर भी रश्मियां पंख फैलायें दिखती
समंदर कहता- नहीं नहीं
सूर्योदय, सूर्यास्त देखने सब मेरे पास आते है.
धीमे धीमे उगता
धीमे धीमे डूबता
डुब?ब से मेरे भीतर समाता
सब तरफ अंधकार हो जाता
रेगिस्तान कहता ना मेरे पास
पेड़ है ना पहाड़, नदियां
सूना सपाट, खुला मैदान
सीधे उगता दिखाई देता है
डुब्ब से डूबता है डिब्बे के पीछे

बादल कहते है सूरज मेरे इशारे पर चलता है
मर्जी होती है उस पर छा जाता हूं
मर्जी होती है हट जाता हूं
मेरे होने से सबको राहत मिलती है
बारिश के आमद की खबर होती है
अब मै क्या कहूं
सूरज मेरा भी है
उसके होने से मेरा जीवन चलता है
वो उगता है तो रौशन होती है दुनियां मेरी
डूबते ही चांद रौशन होता है
यू तो वो सबको दिखता है
पर 'नसीब' देखे किस किस को मिलता है।

यूं पढ़ने पर आपको ये नज्म पर्यावरण से संबंधित लग रही होगी। जी हां, वो तो है। हम जानते है। ईश्वर हमारे जीवन में मूर्त रूप में बाद में आये पहले हमने प्रकृति के पांच तत्वों को ही देवता माना और इसके चलते हमारे चारों तरफ शुद्ध हवा, रोशनी, पानी, हरियाली सब सुरक्षित रहे। आज अगर हम मूर्तियों की पूजा करते है तो हमारा शिव, हमारा कृष्ण सब देवता ना होकर हमारी भावनाएं हो गए हैं। उसी प्रकार हम पूछ सकते है, मन का सूरज क्या कहता है और जवाब आता है मन उदास है तो अर्थ हुआ कि आपको अपने सूरज से वो ऊर्जा वो रोशनी हासिल नहीं हो रही है और हमारा कोई लक्ष्य अंधेरे में है। सोचिए, हम किस कदर पर्यावरण से जुड़े हैं। नजरिया भी बहुत मायने रखता है। मूसलाधार बारिश, कड़कती बिजली, सिस्टम के साथ उनकी याद दिलाती है, मन विभोर हो जाता है।

वहीं कई लोग कीचड़ पानी देख छि- छि- कर उठते है। हमारे सूरज का भी वही हाल है। जब सूरज की रोशनी हमें ठंडक, उज्ज्वल दिन (जाहिर है विटामिन डी भी) का अहसास देती है तब हमें काम करने की इच्छा होती है। हमारे सब काम बनते नजर आते हैं। वही रोशनी जब तेज गर्मी बन आपको जलाने लगे तो समझिए आपके भीतर का सूरज शायद क्रुद्ध है।

मन की परिस्थितियां सूरज के ताप से बदलती है तो क्यों न अपने मन के सूरज को रोशनी से नापा जाए जो आपके जीवन को रोशन करती है। गर्मी को सहज रूप में लिया जाए। हर बार ईर्ष्या, द्वेष, जलन से सूरज का मिजाज ना बिगाड़े बल्कि अपने मन के सूरज को प्यार, संतोष, धैर्य, शांति से ठंडा रखे वरना हम सब अपनी ही अग्नि में जल उठेंगे।

आप समझदार हैं, कहने की आवश्यकता नहीं कि दग्ध सूरज को शीतलता में बदले या अपने बुरे जलते ख्यालों को, प्यार का मरहम लगा शीतल करें, फिर पूछे अपने मन के सूरज और क्या कह रही है जिंदगी ?

ढलती सांझ

फोटो: गिरीश शर्मा

डायन नहीं... बीमार है मां... !

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

ब्रिटिश फिल्म डायरेक्टर लिन रामसे की नई फिल्म 'डाइ माय लव' ऐसी ही ग्रेस (जेनिफर लॉरेंस) की कहानी है, जो बड़े घर में अपने छोटे बच्चे के साथ दिनभर अकेली होती है, क्योंकि पति (रॉबर्ट पेटिनसन) ज्यादातर घर से बाहर ही रहता है। इस दौरान मानसिक उतार-चढ़ाव से ग्रेस गुजरती है, उसे जेनिफर लॉरेंस ने परदे पर उतारा है और उन्हें बेस्ट एक्ट्रेस के अवार्ड का दावेदार बना दिया है।

जऐसी मां की कल्पना भी पाप है, जो बच्चों और उनके साथ से इतर भी कुछ चाहती है। पुराने जमाने में ऐसी महिलाओं को 'डायन' कहा जाता था, जो बच्चे का ख्याल नहीं रखती थी। आज भी ऐसी कई महिलाएं हैं, जिनके साथ कई दिक्कतें हैं, लेकिन तकलीफों का सामना अकेले ही करना होता है।

ब्रिटिश फिल्म डायरेक्टर लिन रामसे की नई फिल्म 'डाइ माय लव' ऐसी ही ग्रेस (जेनिफर लॉरेंस) की कहानी है, जो बड़े घर में अपने छोटे बच्चे के साथ दिनभर अकेली होती है, क्योंकि पति (रॉबर्ट पेटिनसन) ज्यादातर घर से बाहर ही रहता है। इस दौरान मानसिक उतार-चढ़ाव से ग्रेस गुजरती है, उसे जेनिफर लॉरेंस ने परदे पर उतारा है और उन्हें बेस्ट एक्ट्रेस के अवार्ड का दावेदार बना दिया है।

लिन रामसे ने पहले 'वी नीड टू टॉक अबाउट केविन' बनाई थी। फिल्म बताती है कि जब अच्छे माता-पिता के बुरे बच्चे होते हैं तो क्या होता है। क्या इसका मतलब यह है कि वे उतने अच्छे नहीं हैं, जितना उन्होंने खुद के बारे में सोचा था? सवालों के साथ अपराध और डर की परेशान करने वाली फिल्म है। पहली नजर में ही पता चल जाता है कि मां को बच्चा पसंद नहीं है और बच्चा भी उसे पसंद नहीं करता। वह उसका रोना बंद नहीं कर सकती। निराशा और नींद न आने पर मां चिल्लाती है। केविन से पहले मां खुश थी।

इस मुद्दे पर बात बढ़ी है और बेहद जरूरी है कि बच्चा पैदा होने के पहले ही मां-बाप को जानकारी दी जाए, ताकि बीमारी छिपाएं नहीं, इलाज करवाएं। साल भर पहले ही ब्रिटिश डाक्यूमेंट्री फिल्म 'विचेस' आई थी कि महिलाओं ने सही समय पर इलाज लेकर बेहतर जिंदगी बनाई। इसी फिल्म में जब इतिहास खंगाला तो साबित हुआ कि जिन महिलाओं को डायन बता कर जला दिया था, उनमें से ज्यादातर दिमागी बीमार थीं।

मानसिक बीमारी का इलाज ज्यादा जरूरी है। फिल्म में ग्रेस बहुत ही दर्दनाक तरीके से खुद के लिए मौत चुनती है, लेकिन ऐसी कई तकलीफें हैं, जो लंबे समय तक मां, बच्चे और पूरे परिवार के दुःख का कारण बनी रहती हैं। बीमारी को बीमारी की तरह से देखना और उसका इलाज़ करवाना ही इकलौता उपाय तरीका है।